चन्दामामा
अक्तूबर १९९१
4
RS

MAGGI CLUBBERS FUN LOVERS
MAGGI CLUB
मैगी क्लब से मुफ़्त उपहार पाओ, मौज-मस्ती के रंग जमाओ।
आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल हो जाओ, सारे साल मौज मनाओ. न्यूज़ लैटर्स, उपहार, गेम्स और मौज-मस्ती की कई अन्य चीज़ें...
बस तुम यह मैगी नूडल्स के 5 खाली रैपरों के सामने के हिस्से से काटकर हमें भेज दो. और, साथ में अपना नाम, पता और अपनी पसंद का उपहार भी लिख भेजना. हां, अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य हो तो सदस्यता संख्या भी ज़रूर लिखकर भेजना. और, अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो अब मौका मत चूकना. अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. हम तुम्हारे उपहार के साथ मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे!
हमारा पता है:
मैगी क्लब
पो. ओ. बॉक्स 5788
नई दिल्ली-110 055
'मैगी जादू जंगल' से अपना जंगल बनाओ.
MAGGI
Name:
Membership no:

डायमण्ड कॉमिक्स में

अंकुर बाल बुक क्लब

■ क्या है?

देश भर में सबसे अधिक बिकने वाले डायमण्ड कॉमिक्स हर मास मशहूर चरित्रों के हैरतअंगेज और मजेदार कारनामों के साथ हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, गुजराती भाषाओं में प्रकाशित किए जाते हैं। हो सकता है कि आपको इन कामिक्स के मिलने में कुछ परेशानी पेश आती हो, मसलन डैडी-मम्मी का इन कॉमिक्स का लाना भूल जाना, या विक्रेता के पास इनका उपलब्ध न हो पाना। इन सब समस्याओं का समाधान है अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बनना। फिर तो आप घर बैठे हर माह छह नए अंकों का सैट और साथ में समय-समय पर मनोहारी उपहार भी अलग से प्राप्त करेंगे

■ सदस्य अवश्य बनें

इस क्लब की सदस्यता में एक और बड़ा फायदा है कि आपको डायमण्ड कॉमिकों के बारे में अग्रिम जानकारी और यदा-कदा मनोहारी उपहार भी प्राप्त होते रहेंगे। बढ़ता हुआ डाक-व्यय आपका सिरदर्द नहीं होगा—यह हमारी जिम्मेदारी होगी कि समय पर आपको मनचाहे चरित्रों से मिलाएं। बस एक बार अपने मम्मी-पापा को राजी करना होगा कि जब वी.पी. आए तो हर महीने आप छुड़ाते रहें।

■ सदस्य कैसे बनें?

आपको सिर्फ इतना करना है कि 10/- रु. मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा निम्न कूपन भरकर हमारे पास भेज दें। इसमें अपना जन्म दिन जरूर भरें जिसमें हम आपको 'बच्चों के जोक्स' पुस्तक और अन्य उपहार भी समय-समय पर भेज सकें। तब वी.पी. का मूल्य 36/- रु. के बजाय 33/- रु. ही रह जाएगा और 7/- रु. की डाक व्यय की बचत भी होगी। यानी आपके 10/- रु. की बचत। यदि 12 वी.पी. लगातार मंगाएंगे तो 12/- रु. का एक डायजेस्ट 12वीं वी.पी. में मुफ्त उपहार में मिलेगा।

"अंकुर बाल बुक क्लब" के सदस्य बनिए
और घर बैठे डायमण्ड कामिक्स प्राप्त करें
समय से—कम मूल्यों पर—सुरक्षित

हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ____________________

पता ____________________

____

डाकघर ____________ जिला ____________

पिनकोड ____________________

सदस्यता शुल्क 10/- रु. डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा हूं।

मेरा जन्मदिन ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

उलझनों से भरा संसार, जो सुलझा ले वह है होशियार

उलझनों का दूसरा नाम है जीवन!...

...और इस जीवन में सफलता उसी को मिलती है जिसकी बुद्धि तेज होती है, मस्तिष्क विकसित होता है और जो सही समय पर सही निर्णय लेकर उलझनों को सुलझाने की योग्यता रखता है।

पाठ्य-पुस्तकें रटकर परीक्षाएं पास की जा सकती हैं इस तरह जीवन में सफलता की गारण्टी नहीं मिलती।

सफल जीवन के लिये जरूरी है मस्तिष्क को विकसित और बुद्धि को पैना करने की नियमित कोशिश जिसमें तुम्हारी सहायता के लिये—

डायमण्ड पब्लिकेशन्स प्रस्तुत करते हैं.

दिमागी कसरत पज़ल पैक

दिलचस्प और उपयोगी सामग्री से लबालब भरा अपनी तरह का एक दम अनोखा व अनूठा इसकी 64-64 पृष्ठों वाली चार पुस्तकें अपने आप में क्या-क्या समेटे हैं, यह स्वयं देखोगे तभी जानोगे, हम क्या-क्या बतायें! आज ही अपने स्थानीय पुस्तक पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करें या हमें लिखें।

मूल्य : 5.00 रुपये पुस्तक

नये डायमण्ड कामिक्स

महाबली शाका और मौत की घाटी

चाचा भतीजा और बाजीगर अखाड़ू

पल्टू और दुष्ट भतीजे

मामा भांजा और गधा राजकुमार

लम्बू मोटू और हत्यारा वकील

डायमंड कॉमिक्स डाइजेस्ट बेताल कथाएं 3

कार्टून शीर्षक प्रतियोगिता नं. 3 का परिणाम "महाबली शाका और मौत की घाटी" में देखें।

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

BSA Secret Seekers SLR
क्यों यार, कर रहे थे इंतज़ार.
है न? राज़ ढूंढने वाले यार आ गये
खोलने एक नये रहस्य का द्वार.
इस बार ये राज़ ढूंढने वाले यार
देवद्वीप में छुट्टियां मना रहे हैं
धुआंधार. लेकिन एक रात सागर
किनारे हुआ एक तेज़ धमाका.
ये कैसा और कहां का? चारों
को मिला एक कमरा, जो था
मूर्तियों से भरा. ये यहां कैसे
आईं? आसपास ही सरक रही
थी एक चोर की परछाई.
देवद्वीप
रात साढ़े दस बजे. पूजा की आंख न लगे.
पिछली दो रातों को उसने पाया, किसीने समंदर से
तेज़ रोशनी को चमकाया. स्मगलर? लेकिन दूसरे यार
समझते रहे इसे पूजा का डर. रात ११ बजकर
५ मिनट... सब कुछ सामने था! "विपुल, रैल्फ़
उठो." पूजा ने सबको उठाया और दृश्य दिखाया.
चोर की पहचान
अपनी अपनी बीएसए एसएलआर पर सवार
सागर किनारे के लिए निकल पड़े यार. अगर वो
अपनी बीएसए के पहियों पर अपनी पकड़ न जमाते
तो रेत पर कभी के फिसल जाते. नज़दीक पहुंचे
थोड़ा तो उन्हें मछुआरों का गीत
सुनाई पड़ा.
"यहां तो
मछलियों से
जाल है भरा."
पूजा का चेहरा
उतरा. ये तो
स्मगलर नहीं.
तभी पूजा की बीएसए का
पहिया किसी चीज़ पर चढ़ा. उसके
नीचे था कुछ सख़्त पड़ा.
"अरे, ये तो लाल अंकल की छड़ी है."
रैल्फ़ ने पहचाना. लेकिन छड़ी यहां कैसे
Mudra:M:TI:4466:91-HIN
BSA SLR

आई ये न जाना.
घबराए यार अपनी अपनी बीएसए पर सवार चले लगाने पता, अंकल घर पर हैं क्या? वो वहां नहीं थे, लेकिन तभी दरवाज़ा चीं करके खुला और अंकल अंदर आते दिखे... छड़ी बिना, जूतों बिना. बड़े अचरज की बात है.

का रहस्य

पूजा ने परेशान होकर कहा. "छड़ी के बिना उन्होंने अंकल को कभी देखा नहीं"

मूर्तियां ही मूर्तियां

ज्योंही बंद हुआ अंकल का दरवाज़ा, यारों ने उधर ही क़दम बढ़ाए, जिधर से अंकल आए, रैल्फ़ ने अपनी दूरबीन संभाली. उसकी बीएसए ने दिया उसका साथ, क्योंकि वह हल्की थी, रही उसके हाथ. "झोंपड़ी. झटका, झटका. हमें किस्मत ने सही जगह ला पटका." फिर पूजा ने भी दूरबीन से देखा. "ये क्या? यहां तो एक खज़ाना है. हर साइज़ में देवी देवताओं की चुराई हुई मूर्तियों के ढेर – जिनके बारे में अख़बार चिल्लाते रहे – अन्धेर है अन्धेर.

टार्च की रोशनी की एक हल्की सी लकीर, अन्धेरे को गई चीर. झोंपड़ी की तरफ़ बढ़ रहा था जैसे रोशनी का तीर. जल्दी करो यार, अपनी अपनी बीएसए एसएलआर पर हो जाओ सवार. छिप जाओ नीचे, पहाड़ियों के पीछे.

मूर्तिचोर कौन है? इसे जानने के लिए पढ़ो चिड़ियाचोरों का रहस्य.

और अब हर बीएसए एसएलआर के साथ डिकेल्स स्टीकर और ब्रेकलाइट भी.

Ekco

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

सच्चाई की खोज

अक्तूबर का महीना आता है तो महात्मा गांधी के नाम से कई-कुछ सुनने और देखने को मिलता है । राष्ट्र तब उनके जन्मदिन पर उन्हें याद करता है । महात्मा का पर्यायवाची है—सत्याग्रह ।

बीसवीं शताब्दी के पहले दशक में भारत लौटने से पहले मोहनदास करमचंद गांधी, जो कि दक्षिण अफ्रीका में वकालत करते थे, उस देश की भारतीय समुदाय-विरोधी जातिभेद की प्रताड़क नीति की मुख़ालफ़त कर रहे थे । उन्होंने उसे 'पैसिव रज़िस्टेंस', यानी शिथिल विरोध, का नाम दिया था ।

भारत में आने के कुछ ही समय बाद उन्होंने विदेशी सत्ता से देश को आज़ाद कराने की जनता की लड़ाई का नेतृत्व संभाल लिया । इस लड़ाई को 'सत्याग्रह' का नाम दिया गया, और इसने सरकार के साथ असहयोग का रूप ले लिया ।

'सत्याग्रह' का शाब्दिक अर्थ है सच्चाई की खोज । इसमें हिंसा की कोई गुंजाइश नहीं । इसमें व्यक्तिगत प्रयास तथा समर्पित कार्यशीलता का भी समावेश है । गांधीजी इसे और भी गहरे अर्थों में इस्तेमाल करते थे । वह इसे 'आत्मिक शक्ति' कहते थे । सरल शब्दों में इसका अर्थ है—व्यक्ति की निष्ठा । उन्होंने यह कर दिखाया कि इस शक्ति का यदि ठीक इस्तेमाल किया जाये तो कुछ भी प्राप्त कर लेना असंभव नहीं है । लेकिन व्यक्ति को इस शक्ति को खुद ही धार देनी होती है ।

जब से हमें आज़ादी मिली है, तब से लोग इसी सत्याग्रह का सहारा लेते आये हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश वे साथ-साथ हिंसा पर भी उतारू हो जाते हैं । इससे वे महात्मा के प्रति न्याय नहीं करते । यदि किसी समस्या के पीछे सच्चाई को ढूंढा जाये तो उसका समाधान कभी भी किसी की पहुंच से परे नहीं होगा ।

वर्ष : ४४ | अक्तूबर १९९१ | अंक : २

एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

Campco

लालाला...लालाला...
भारत का अनोखा स्वादभरा, क्रीमभरा स्वप्नमधुर चॉकलेट

कैम्पको क्रीमी मिल्क
चॉकलेट. सर्वोत्तम एक्सपोर्ट
क्वालिटी कोको का मज़ेदार
स्वाद जिसे चखते ही
दिल झूम उठे!

TOP QUALITY LOW PRICE

कैम्पको लिमिटेड, मैंगलोर

Campco chocolates | Milk | White | Treat | TURBO | Eclairs | Fun Bite | Playtime | TOFFEE | Assorted Gift Box | Campco beverages | WINNER | COCOA

रंगभेद समाप्ति पर

समूचे विश्व में खेल-प्रेमी दक्षिण अफ्रीका का अंतर्राष्ट्रीय खेलों में हिस्सा लेने के लिए उत्सुकता से इंतजार करेंगे, क्योंकि अब उस पर से हिस्सा लेने संबंधी प्रतिबंध हट गया। जुलाई के शुरू में इस देश को २१ वर्ष के बहिष्कार के बाद अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद में ले लिया गया। इसके अलावा इसे अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक कमेटी में भी ले लिया गया। इस कमेटी ने दक्षिणी अफ्रीका को उसकी रंगभेद की नीतियों के कारण १९७० में अपने से बाहर कर दिया था।

इस प्रतिबंध के हट जाने से दक्षिण अफ्रीका अब फरवरी १९९२ में होने वाले विश्व कप क्रिकेट तथा बाद में उसी वर्ष होने वाले बार्सिलोना (स्पेन) ओलंपिक्स में भाग ले सकता है। इस देश की रंगभेद् नीति के कारण वहां के खिलाड़ियों की पूरी एक पीढ़ी को विश्व के बेहतरीन खिलाड़ियों से प्रतिस्पर्धा करने का अधिकार खत्म हो गया था।

सर्वश्वेत प्रिटोरिया शासन की नीति में पहला परिवर्तन तब देखा गया जब वहां के अश्वेत नेता नेल्सन मंडेला को २५ साल से अधिक जेल में बंदी बनाकर रखने के बाद १९८९ में छोड़ा गया। नेल्सन मंडेला ने

वहां के राष्ट्रपति डी. क्लार्क से वार्त्तालाप शुरू किया। परिणाम स्वरूप डी. क्लार्क रंगभेद की नीति वाले मुख्य तीन कानूनों को हटाने के लिए हाल ही में तैयार हुआ है। इस से अश्वेतों के बच्चे अपनी पसंद के किसी भी स्कूल में शिक्षा पा सकते हैं। दूसरे, वे देश में कहीं भी रह सकते हैं। तीसरे, वे श्वेतों के संस्थानों में भी काम के लिए जा सकते हैं।

याद होगा कि भारत ने विश्व के अन्य राष्ट्रों को इस बात के लिए तैयार किया था कि वे रंगभेद की नीति को खत्म करने के लिए दक्षिण अफ्रीका पर दबाव डालें। वे राष्ट्र खुशी-खुशी इस काम में आगे आये

और उन्होंने उस देश के खिलाफ़ दूसरे कदम उठाने के अलावा आर्थिक प्रतिबंध भी लगा दिये थे ।

दक्षिण अफ़्रीका के बदलते परिदृश्य को समूचा विश्व साँस रोके देख रहा था । अमरीका की ओर से तुरंत प्रतिक्रिया हुई । उसने उस देश के खिलाफ छः साल पुराने आर्थिक प्रतिबंध हटा दिये । जापान भी कुछ ऐसा ही करना चाहता था । इसके विपरीत आस्ट्रेलिया तथा स्वीडन जैसे देशों का कहना था कि अमरीका का यह निर्णय वक्त से पहले हुआ है ।

अमरीका का तर्क यह था कि दक्षिण अफ़्रीका ने आपात-स्थिति हटा दी है, राजनीतिक बंदियों को रिहा कर दिया है, और इस मुद्दे पर वार्त्तालाप शुरू कर दिया है कि कैसे वहाँ ग़ैर-जातिवादी सरकार बैठायी जाये ।

नेल्सन मंडेला ने प्रिटोरिया के इस रुख का स्वागत किया है, लेकिन साथ-साथ सतर्क रहने को भी कहा है । वहां अब भी किसी-न-किसी आड़ के तहत राजनीतिक बंदी जेल में पड़े हैं और अब भी राजनीतिक गतिविधियों या राजनीतिक अभिव्यक्ति की छूट नहीं है । इसका कारण यह बताया जाता है कि वहां अश्वेतों के बीच आपस में ही लगातार अहिंसा होती रहती है । इसके अलावा वहां की सरकार भी कुछ अश्वेतों की पक्षधरता करती है ।

Nelson Mandela with wife Winnie

दो बेरोज़गार

परशुराम के पिता रामशरण की बुढ़ापे के कारण मृत्यु हो चुकी थी। अब परशुराम को पता चला कि दायित्व क्या होता है। उसकी उम्र उस समय पच्चीस साल से ऊपर हो चली थी, पर उसका मन किसी काम में नहीं था। वह अपना समय अपने हमउम्र और बेकार युवकों के साथ घूमने-फिरने तथा जुआ खेलने में बरबाद करता था। जब तक रामशरण ज़िंदा था, वह परशुराम को किसी बात से मना नहीं करता था। वह जानता था परशुराम माँ के प्रेम से वंचित है।

पिता के देहांत के बाद परशुराम ने काफी कर्ज़ चढ़ा लिया जिसे उतारने के लिए उसे अब अपना घर तक बेच डालना पड़ा। गांव में उसकी आदत से हर कोई परिचित था, इसलिए उसे कोई काम देने को तैयार भी न था। वह तो गांववालों की नजरों में एक आवारा और बेकार युवक था।

एक बार उसने काम के लिए काफी कोशिश की। वह खूब घूमा, पर उसे कहीं काम न मिला। वह बेहद थक गया था, और यह भी जान गया था कि गांव में उसे कोई नौकरी नहीं देगा। इसलिए एक शाम वह अपने गांव से निकल पड़ा ताकि कहीं और काम की तलाश करे। चलते-चलते वह एक जंगल में पहुंचा। तब तक अंधेरा हो चुका था। फिर तूफान आ गया और पानी भी बरसने लगा। परशुराम की समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहां आश्रय पाये और रात बिताये। वह पेड़ों के नीचे-नीचे होकर चल रहा था। तभी उसे थोड़ी दूरी पर कुछ रोशनी दिखाई दी। वह उस रोशनी की ओर ही चल पड़ा

वह रोशनी एक पुराने, टूटे मंदिर से आ रही थी। वह देवी का मंदिर था। वहां भीतर एक दीप जल रहा था और एक युवक उस

शशिधर शर्मा

जगह को कपड़े से साफ कर रहा था। परशुराम को देखते ही वह बोला, "लगता है काफी भीग गये हो। पहले अपने सर के बाल अच्छी तरह पोंछ लो और उन्हें सुखा लो," और यह कहकर उसने उसे एक सूखा कपड़ा दिया।

परशुराम ने उस कपड़े से अपना सर पोंछा और कपड़े भी बदल लिये।

युवक ने परशुराम को अपना नाम यतींद्र बताया। उसने यह भी कहा कि वह नौकरी ढूंढ़ने निकला है, पर रास्ते में बारिश आ गयी जिससे वह यहां रुक गया। फिर उसने परशुराम से पूछा कि वह क्या करता है।

परशुराम ने कुछ नहीं छिपाया और अपने बारे में यतींद्र को सब कुछ साफ-साफ बता दिया। यह सुनकर यतींद्र हंस दिया और बोला, "तब तो हम दोनों एक ही नाव के सवार हैं। चलो, अच्छा हुआ, मुझे एक हमसफर मिल गया।" फिर उसने अपने साथ लायी रोटियों की पोटली खोली और दोनों मिलकर खाने लगे। भूखे तो दोनों ही काफी थे, इसलिए मिल-बांटकर खाने में उन्हें बड़ा आनंद आया। यतींद्र ने जो जगह साफ की थी, वहीं दोनों लेट गये।

अब बात परशुराम ने शुरू की, "आज तक मैं ने नौकरी के लिए जी-तोड़ कोशिश नहीं की थी, लेकिन ऐसी कोशिश करने वालों के बारे में मैंने काफी कुछ सुन रखा है कि नौकरी पाने के लिए बड़े-बड़े लोगों की सिफारिश तो ज़रूरी ही, रिश्वत भी देनी पड़ती है। बिना इसके नौकरी पा लेना लगभग असंभव ही है।"

"तुम ठीक कहते हो। पर हम लाचार हैं। हां, इतनी बात जरूर है कि अगर हमें कोई नौकरी दे तो हम पूरी ईमानदारी से काम करेंगे और उसमें अपनी जी-जान लगा देंगे।" यतींद्र ने कहा।

"तुम्हें वह अवसर मैं दिलवा दूंगी।" यह आवाज़ एक देव-स्त्री की थी जो वहां एकाएक प्रकट हुई थी।

यतींद्र और परशुराम ने उसे फौरन पहचान लिया। वह उसी मंदिर की देवी थी। उन्होंने उसे साष्टांग प्रणाम किया और कहा, "माते! इन दो बेकारों पर तुम्हारी कृपा हुई, हम धन्य हैं! हम जीवन-भर तुम्हारे प्रति

कृतज्ञ रहेंगे । पर कृपया यह भी बता दो कि तुम हमारी किस तरह मदद करना चाहती हो?"

इस पर देवी बोली, "मैं तुम दोनों को तीन चमत्कारी वस्तुएं दूंगी । तुम तीन दिन बाद यहां वापस आना और मुझे बताना कि उनके माध्यम से तुम्हें क्या प्राप्त हुआ ।"

"जैसा तुम्हारा आदेश, माते!" परशुराम और यतींद्र दोनों एकाएक बोले ।

तब देवी ने उन दोनों को एक-एक मिट्टी का बर्तन दिया और कहा, "इसे ज़मीन पर पटककर फोड़ देना । फोड़ते समय जिसका तुम ध्यान करोगे, वही तुम्हारे सामने प्रकट हो जायेगा ।"

"पर इससे हमें लाभ क्या होगा?" यतींद्र ने उत्सुकतावश पूछा ।

अब देवी ने उन्हें एक-एक काली मिर्च दी और बोली, "इसे अपने मुंह में डालकर तुम उससे जो भी मांगोगे, वह देगा!"

"तीसरी वस्तु क्या है, माते?" अब प्रश्न करने वाला परशुराम था ।

देवी ने उन्हें एक-एक तांबे की अंगूठी देते हुए कहा, "यह जब तक तुम्हारी उंगली पर रहेगी, तब तक उन दोनों वस्तुओं से जो भी तुम्हें प्राप्त होगा, वह तुम्हारे पास रहेगा ।" और देवी वहां से अदृश्य हो गयी ।

सुबह होने वाली थी । उधर बारिश भी रुक गयी थी । यतींद्र परशुराम से बोला, "मैं पूरब की ओर जा रहा हूं । चाहो तो मेरे साथ चल सकते हो ।"

"मैं पश्चिम की ओर जाऊंगा ।" परशुराम बोला, "तीसरे दिन, जैसा कि हमने देवी को वचन दिया है, हम यहीं, इसी मंदिर में मिलेंगे ।"

परशुराम अब पश्चिम की ओर जा रहा था । वह दिन भर चलता रहा और रात को एक नगर में पहुंचा । उसने यह पहले ही तय कर लिया था कि वह कैसे उन तीन वस्तुओं का उपयोग करेगा ।

पहले उसने एक महलनुमा भवन के सामने मिट्टी का बर्तन फोड़ा और अपने मन में विचार किया कि उस मकान का मालिक उसके सामने आ जाये ।

थोड़ी देर में एक अधेड़ स्त्री दरवाज़ा खोलकर उसके सामने आ खड़ी हुई । उसके

शरीर पर सोने के गहने थे ।

परशुराम ने अब वह काली मिर्च अपने मुंह में रख ली और उस स्त्री से बोला, "आपके पास जितना भी सोना है, आप फौरन मुझे दे दीजिए ।"

स्त्री जैसे कि नींद की खुमारी में थी, उसने अपना सर पीछे की ओर घुमाया और ज़ोर-ज़ोर से चीखनें लगी, "सोना! सोना!"

सोना, दरअसल, उसके कुत्ते का नाम था जो शेर की तरह दिखता था । मालकिन की आवाज़ सुनकर सोना भौंकता हुआ वहां आया और उसने परशुराम की टांग अपने मुंह में ले ली, और उसमें अपनें दांत गड़ा दिये ।

परशराम को घाव गहरा आया था । खून भी क़ाफी बहे जा रहा था । मालकिन ने बराबर कुत्ते को रोकना चाहा, पर वह परशुराम की टांग छोड़ ही नहीं रहा था ।

परशुराम को कोई बात याद आयी और उसने फौरन अपनी उंगली से तांबे की अंगूठी निकालकर परे फेंक दी । तब कहीं उस कुत्ते ने परशुराम को छोड़ा । फिर यह सब जैसे सपने में बीता हो, वह कुत्ता और वह स्त्री चुपके से घर के भीतर चले गये ।

परशुराम दो दिन उसी नगर में रहा और जड़ी-बूटियों से कुत्ते के काटे का इलाज़ करता रहा । तीसरे दिन वह गिरते पड़ते किसी तरह रात के समय उसी जंगल वाले मंदिर में पहुंचा ।

देवी पहले ही उसका इंतज़ार कर रही थी । उसने जैसे ही उसे देखा, वैसे ही कह उठी, "यह क्या हाल बना रखा है तुमने अपना! साफ़-साफ बताओ कि क्या बीती तुम्हारे साथ?"

परशुराम ने, जो कछ उसके साथ बीता था,सच-सच बता दिया ।

थोड़ी देर में यतींद्र भी वहां आ पहुंचा । वह बढ़िया से कपड़े पहने हुए था । मंदिर की देवी उसके भी अनुभव सुनने को आतुर थी । यतींद्र ने तब सविस्तार बताया कि देवी द्वारा दी गयी तीन अद्‌भुत वस्तुओं का उसने कैसे प्रयोग किया । वह बोला, "मैंने सब कुछ पहले ही तय कर लिया था । मैं यहां से सीधे राजधानी पहुंचा । फिर राजधानी के राजोद्यान में पहुंचा, और वहां मैंने मिट्टी का बर्तन फोड़ा और अपने मन में राजा का ध्यान

किया। थोड़ी ही देर में राजा वहां आ पंहुचे। राजा को अपने सामने पाकर मैंने काली मिर्च अपने मुंह में रख ली और उनसे विनती की– 'राजन्, मुझे अपने दरबार में किसी काम पर रख लीजिए। आप की बड़ी कृपा होगी।' राजा ने मेरी ओर मंद-मंद मुस्कराते हुए देखा और बोले– 'तुम्हें काम हमने दे दिया समझो। तुम जब चाहो आ जाओ।' इस तरह मुझे नौकरी मिल गयी, और साथ में कुछ अग्रिम राशि भी मिल गयी, ताकि मैं ढंग के कपड़ों की व्यवस्था कर सकूं। अब मैं तुम्हारे सामने उपस्थित हूँ।"

इतना कहकर उसने अपनी उंगली से तांबे की अंगूठी उतारी और देवी की ओर बढ़ाते हुए बोला, "मां, मुझे अब अपनी शक्ति पर विश्वास है। तुम्हारी कृपा से मैं अपनी नौकरी को बरकरार रख पाऊँगा, क्योंकि मैं जो काम करता हूँ, पूरी निष्ठा से करता हूँ।"

देवी ने अब दोनों को संबोधित करते हुए कहा, "मैंने तुम दोनों को एक-सी वस्तुएं दी थीं, लेकिन परशुराम का इरादा ठीक नहीं था; इसलिए वह उनसे कोई लाभ नहीं उठा सका। यतींद्र अपनी काली मिर्च के बल पर यदि राजा से आधा राज भी मांगता तो वह दे देता। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।" और इतना कहकर देवी अंतर्धान हो गयी।

अगले रोज़ जैसे ही सुबह हुई, यतींद्र राजधानी जाने के लिए तैयार हो गया। उसने परशुराम से कहा, "अगर तुम मेरे साथ चलना चाहो तो तुम्हारा स्वागत है। मेरे यहां रहकर तुम नौकरी के लिए कोशिश करते रहना। एक-न-एक दिन तो मिल ही जायेगी।"

"तुम ठीक कहते हो! मुझे तुम्हारे जैसा सदाशयी ही होना चाहिए था। मैं तुम्हारे साथ रहूंगा तो बहुत-कुछ सीखूंगा। मैं ज़रूर तुम्हारे साथ चलना चाहूंगा।" और इन्हीं शब्दों के साथ परशुराम यतींद्र के साथ राजधानी की ओर चल पड़ा।

रट्टू तोता

शिवपुरी गांव में संतोष नाम का एक आदमी रहता था । वह काफ़ी दिनों से एक तोता पालने की सोच रहा था । एक बार बाज़ार में एक दुकान पर उसे एक सुंदर-सा तोता दीख पड़ा । संतोष ने फौरन दुकानदार से पूछा, "इसके क्या दाम हैं?"

"सौ रुपये!" दुकानदार ने उत्तर दिया ।

"सौ रुपये! बाप रे!" संतोष ने आश्चर्य प्रकट किया ।

"यह कोई मामूली तोता नहीं । आप चाहें तो खुद इसी तोते से पूछ लें कि ये दाम वाजिब हैं कि नहीं ।" दुकानदार ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा ।

"क्या यह दुकानदार ठीक कहता है? क्या तुम्हारे दाम वाकई सौ रुपये हैं?" संतोष अब तोते से मुखातिब था ।

"इसमें संदेह ही गुंजाइश ही कहां है!" तोते ने उत्तर दिया ।

यह उत्तर पाकर संतोष को तोते की अहमियत का एहसास हो गया । उसने दुकानदार को सौ रुपये देकर फौरन वह तोता खरीद लिया । फिर वह बड़ा आश्वस्त होकर घर लौटा ।

संतोष की पत्नी तथा उसके बच्चे तोते से जो भी प्रश्न पूछते, वह केवल एक ही उत्तर देता, "इसमें संदेह की गुंजाइश ही कहां है!"

संतोष अब जान गया था कि तोते को केवल एक ही वाक्य रटाया गया है और उस से वह धोखा खाकर दुकानदार को सौ रुपये दे आया । नुकसान काफ़ी हुआ था, इसलिए संतोष अपना सर पीटने लगा और कह उठा, "ओह, मैंने कैसा धोखा खाया! मैं अव्वल दर्जे का मूर्ख हूं ।"

संतोष की बात सुनकर तोता तुरंत बोला, "इसमें संदेह की गुंजाइश ही कहां है!"

तोते का यह वाक्य सुनकर अब संतोष को जबरदस्त हंसी आ गयी । जब वह हंसा तो उसके बीवी-बच्चे भी उसी की तरह ज़ोर-ज़ोर से हंसते हुए लोट-पोट होने लगे ।

—रमेश वर्मा

अपूर्व के पराक्रम

७

[अपूर्व एक नन्हा प्राणी है, गुड़िया के समान । लेकिन उसकी शक्ति अद्भुत है, क्योंकि उसका आविर्भाव हिमालय में किये गये एक यज्ञ से हुआ है । घोर कठिनाइयों से लोगों को उबारना उसके जीवन का ध्येय है । अब वह समीर की सहायता से, जिसे उसने पहले बचाया था, जहाज़ पर सवार पाँच बालकों को बचाने की कोशिश में है । उन्हें समुद्री लुटेरे गुलाम मंड़ी में बेचने का इरादा रखते हैं । —अब आगे पढ़िए ।]

"क्यों बच्चो, उठोगे नहीं? देखो, सागर में सूरज के क्या ठाठ हैं! क्या तुम इस नज़ारे का आनंद नहीं लेना चाहते?"

ये शब्द जिस व्यक्ति ने कहे थे, लुटेरों का यह वही छोटा सरदार था जिसने पिछली शाम बड़े सरदार को बड़ी बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया था । अब वह खींसें निपोरे मुस्करा रहा था ।

अपूर्व ने समीर को पहले ही बता दिया था कि उसे क्या-क्या करना है । समीर ने पांचों बालकों को बता दिया था कि वे सोये रहने का बहाना करें, चाहे रात भर वे एक पल भी सो नहीं सके थे । वैसे तो उन बालकों को जैसे ही पता चला था कि उनका अपहरण हो चुका है, संभव है वे बेहोश हो जाते या ज़ोर-ज़ोर से रोने-चिल्लाने लगते, लेकिन हमउम्र और निडर समीर के वहाँ होने से उनका ढाढ़स बंधा हुआ था । समीर ने न ही केवल उसका डर भगा दिया था, बल्कि उन्हें खुश भी रखे हुए था ।

छोटे सरदार के पुकारने पर बालक उठ बैठे और ऐसे दिखावा करने लगे जैसे उन्हें कुछ पता ही न हो ।

"हम कहां हैं?" छोटे सरदार को देखकर समीर ने ही प्रश्न किया, "और आप कौन हैं, श्रीमान्?"

"चालो, पहले मैं तुम्हारे दूसरे प्रश्न का ही उत्तर देता हूं । मेरा नाम लालू है । मैं इस जहाज़ का कप्तान हूं ।" छोटे सरदार ने अपना परिचय दिया ।

"जहाज़ के कप्तान?" समीर ने प्रश्न-भरी नज़रों से उस छोटे सरदार की तरफ देखा ।

"तुम्हें हैरानी हो रही है? खैर, समझ लो, जो कप्तान तुम्हें इस जहाज़ में लाया था, उसे किसी काम से एकाएक कहीं जाना पड़ा, और जाते समय अपना जहाज़ वह मेरे ज़िम्मे कर गया । वैसे, मैं उस पहले कप्तान का निजी साथी हूँ और जब भी वह कहीं बाहर जाता, मैं ही उसकी जगह इस जहाज़ का कप्तान बनता हूँ । मुझे उम्मीद है अब तुम लोग समझ गये होंगे कि तुम कहां हो । तुम एक जहाज़ पर सवार हो ।" लालू ने ऐसा कहा गोया वह उनका शान बढ़ा रहा हो ।

"तो इस जहाज़ पर हम बहुत देर से हैं, फिर हमें अब वापस जाना चाहिए," समीर ने भोलेपन से कहा, और यह कहकर वह अंगड़ाई लेता-सा उठ बैठा ।

"हा!हा!" लालू दानव की तरह हंसने लगा । फिर उसने अपनी हंसी रोकी और बोला, "यह तुम्हारे वापस जाने का समय नहीं, यह तो तुम्हारे समुद्र की सैर करने का समय है । पता नहीं तुम लोगों को क्या हुआ, तुम सब लोग सो गये, और तुम्हें नींद से जगाने का हमारा मन नहीं हुआ । हमने लंगर उठा दिया और रात भर से अब हम समुद्र में हैं । अब बात समझ में आ गयी न? क्या ख्याल है? क्या तुम तैर कर वापस किनारे पर जा सकते हो?"

लालू की कोशिश तो यही थी कि उसके बोलने के तरीके में किसी प्रकार का व्यंग्य न झलके, पर व्यंग्य आ ही गया ।

बालकों ने एक-दूसरे की तरफ ऐसे देखा जैसे कि वे इस विचित्र स्थिति के बारे में कुछ भी न जानते हों ।

"तब हमें क्या करना चाहिए?" समीर ने प्रश्न किया।"

"समुद्र की सैर करो। कुछ दिनों के बाद हम वापस वहीं पहुँच जायेंगे जहां से हम रवाना हुए थे। तब तक तुम कई-कुछ देख चुके होगे और तुम्हें नये-नये अनुभव प्राप्त हो चुके होंगे।" लालू ने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा।

"विचार तो बुरा नहीं है! पर हमारे माता-पिता का क्या होगा? हमारे घर-परिवार के लोगों और रिश्तेदारों का क्या होगा? जब वे हमें ढूंढ़ नहीं पायेंगे तो क्या वे पागलों जैसे नहीं हो जायेंगे?" एक बालक ने अपनी मासूमियत की झलक देते हुए प्रश्न के अंदाज में कहा।

"लेकिन जब तुम लौटोगे, क्या उन्हें भरपूर खुशी नहीं होगी?" लालू ने अपनी राय थोपनी चाही।

"आप वाकई बहुत समझदार हैं।" समीर ने टिप्पणी की।

लालू को लगा कि उसकी बड़ाई हो रही है। बालकों को समझा पाने की कुशलता पर वह बहुत खुश था। उसने बड़े गर्व से अपने सहायकों की ओर देखा जो कि पास ही दरवाज़े में खड़े थे। उसका ख्याल था कि उन्होंने भी यह वाक्य सुना होगा।

बालकों को अब जहाज़ के ऊपरी हिस्से पर ले जाया गया। वे अब वहाँ खड़े इतमीनान से समुद्र में सूर्योदय का आनंद लेने लगे।

इतने में अपूर्व ने समीर को आहिस्ते से पुकारा। समीर जानता था कि जब अपूर्व उसे पुकारेगा तो उसकी आवाज़ केवल वही सुन

सुना—लालू और उसके साथी अपनी योजना बना रहे थे ।

"इन्हें उम्मीद है कि एक व्यापारी जहाज़ इन्हें रास्ते में मिलेगा । ये उसे लूटना चाहते हैं । यह काम सरंजाम देने के लिए, हो सकता है, ये लोग तुम लोगों का भी किसी-न-किसी ढंग से इस्तेमाल करें । इनसे यह जानने की कोशिश करो कि आख़िर ये करना क्या चाहते हैं । इस राज़ का अगर तुम्हें पता चल जाए तो मुझे भी बताओ । शायद मैं कहीं चुपके से बैठकर तुम लोगों की बातें सुन भी सकूं । मैं तब उस जहाज़ को समय पर चेता सकूंगा ।"

तभी समीर को अपने पीछे से कप्तान लालू की आवाज़ सुनाई दी ।

"अरे बच्चे, इस तरह झुको नहीं । कहीं समुद्र में न लुढ़क जाना । समुद्र में लुढ़क गये तो ह्वेल मछली तुम्हें ही नाश्ते में इस्तेमाल करेगी, और इधर मैं देखता ही रह जाऊंगा । अच्छा, अब जल्दी करो—तुम मेरे साथ नाश्ता करने क्यों नहीं आ रहे!" लालू ने हंसते हुए कहा ।

समीर ने पीछे मुड़कर एक बार बड़े ही प्यार से लालू की तरफ देखा और खूब जमकर मुस्कराया और वहाँ से पीछे उनके पास चल दिया । फिर वे सब लालू के साथ बैठकर नाश्ता करने लगे ।

"पर, यह जहाज़ आप किस काम में लाते हैं?" समीर ने प्रश्न किया ।

"हम सौदागर हैं, बच्चो! हमारा बुरा

पायेगा ।

लेकिन समीर को यह पता नहीं चला कि वह आवाज़ आ कहां से रही है । इसलिए वह जहाज़ के ऊपरी भाग के बिलकुल सिरे पर जा पहुँचा । अपूर्व वहीं था, और एक डॉल्फिन मछली की पीठ पर सवार था । डॉल्फिन उसे लिये जहाज़ के साथ-साथ बराबर तैरे जा रही थी ।

अपूर्व ने कहा, "अब तुम इन लुटेरों के चंगुल में हो और उन से बच नहीं सकते । इसलिए अब वे तुम्हारे साथ सख्ती से भी पेश आ सकते हैं । लेकिन अगर वे भद्र होने का दिखावा कर रहे हैं तो इसके पीछे उनका कोई और मतलब होगा; वे तुम लोगों से कुछ और करवाना चाह रहे होंगे । कल रात मैंने

वक्त आ गया था। हमें एक दूसरे सौदागर ने लूट लिया।" लालू ने भोलेपन से उत्तर दिया।

"बड़ा दुष्ट था वह!" समीर ने हमदर्दी जतायी।

"तुम ठीक कहते हो, मेरे दोस्त! वह दुष्ट ही नहीं, ज़ालिम भी था। उसने मेरे कई आदमियों को मार डाला। हम इसके लिए तैयार नहीं थे। हमारा यह धंधा नहीं है," लालू नें अपनी लाचारी जताते हुए कहा।

"आप भले और सीधे ही नहीं, दयालु और उदार भी हैं। कौन है ऐसा जो पाँच-नहीं, मेरा मतलब है छः—बच्चों को जहाज़ पर आंमत्रित करेगा और फिर उन्हें मुफ्त ही सैर कराने के अलावा उन्हें मुफ्त भोजन और रहने की जगह भी देगा। लेकिन अब आप क्या करना चाहते हैं?" समीर ने जिज्ञासा प्रकट की।

"अब हम एक टापू की ओर बढ़ रहे हैं। वहां, हमें उम्मीद है, हम कुछ कमाई कर सकेंगे।" लालू ने कहा।

"लेकिन कैसे? आपके पास बेचने के लिए कोई सामान तो है नहीं। हां, अगर हम छः को ही बेचना है तो बात अलग है।" समीर ने यों ही हंसते हुए कह दिया।

"हा! हा! हा! हा! हा! हा!" लालू जान-बूझकर हंसा, "तुम लोग मज़ाक अच्छा कर लेते हो! है न! लेकिन मुझे तुम्हारे सवाल का जवाब भी देना ही चाहिए। हां, हमारे पास बेचने को कुछ नहीं है, लेकिन

समुद्र में भी, यानी यहां भी, हमें कुछ सामान मिल सकता है, बशर्ते कि तुम लोग हमारी कुछ मदद करो।"

"यहीं, समुद्र में? वह कैसे? हम किस प्रकार आप की मदद कर सकते हैं?" समीर ने सहज होते हुए पूछा।

"अगर हमारा हिसाब-किताब ठीक है तो हमें बहुत जल्द ही वह जहाज़ मिलेगा जिसके सौदागर ने हमें लूटा था। मेरा सुझाव है कि हम उस जहाज़ के बिलकुल नज़दीक चले जायें और वहां पहुंचकर खतरे का संकेत दें—काला झंडा हिलाकर। तुम सब बच्चे यहीं छत पर ही खड़े रहना और मदद के लिए चिल्लाना।" लालू ने कहा।

"फिर?" समीर ने पूछा।

"जब वह जहाज़ हमारे नजदीक आयेगा तो तुम कहना कि लुटेरों ने इस जहाज़ के चालकों को मार डाला है और तुम्हारे अभिभावकों का भी खात्मा कर दिया है, क्योंकि वे भी इसी जहाज़ पर सवार थे। वे कुछ और भी जानना चाहेंगे; इसलिए हमारे जहाज़ पर चले आयेंगे। तुम उन्हें हमारे कमरे में ले आना। वहां हम उनका इंतज़ार करेंगे। बस, तुम्हें इतना ही करना होगा। बाकी हम खुद संभाल लेंगे।" और यह कहते हुए लालू खी-खी करके हंसने लगा।

"क्या बात है!" वे बालक एकसाथ बोल उठे। समीर ने जैसे उन्हें समझाया था, उन्होंने वैसा ही किया था।

"तुम्हें यह योजना ठीक लगी? तो ठीक है! तुम्हें तुम्हारे सहयोग के लिए इनाम दिया जायेगा," लालू ने बड़े बुजुर्गों की तरह कहा।

"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! पर आप उस सौदागर और उसके आदमियों का क्या करेंगे?" समीर ने पूछा।

प्रश्न सुनकर लालू कुछ घबराया। उसे फौरन जवाब नहीं सूझा। हकलाते हुए बोला, "जो कुछ उन्होंने हमारे साथ किया, उनके साथ भी वही कुछ होना चाहिए। लेकिन तुम जानते ही हो कि मेरे दिल में कितनी दया है! मैं उनके जहाज़ को लूटकर ही संतोष कर लूंगा। हम उनके जहाज़ को डुबो भी सकते हैं और उन्हें कैदी भी बना सकते हैं, और बाद में उन्हें गुलामों की मंडी में बेच सकते हैं। उनकी जान बख्श देना भी उन पर काफी दयालुता होगी। कहो, क्या कहते हो तुम?"

गुलाम मंडी का ज़िक्र सुनकर बालक सर से पांव तक कांप गये। होगा तो उनके साथ भी यही, जब तक कि वे उनके चंगुल से बच निकलने की योजना को पूरा नहीं कर लेते!

इतने में सरदार का एक सहायक वहां आया। वह काफी उत्तेजित था। बोला, "सरदार, जहाज़ का पता लगा लिया गया है।"

"बहुत खूब! अब तुम अपने आदमियों से कहो कि वे उसी दिशा में जहाज़ को जल्दी से जल्दी मोड़ दे जिधर वह जहाज़ है। लेकिन एक बात का ख्याल रखना – जैसे ही तुम उस

जहाज़ के इतने करीब हो जाओ कि उस जहाज़ के लोग हमें देख सकें, तो फौरन अपने जहाज़ की बागडोर इन बच्चों के हाथ में दे देना और खुद छिप जाना ।"

लालू और वे बालक अब जहाज़ की छत पर फिर आ गये थे । वह व्यापारी-जहाज़ ज़्यादा दूर नहीं था । लुटेरों का यह ज़हाज़ बड़ी तेज़ी से उसकी तरफ बढ़ रहा था । ये लुटेरे जहाज़रानी में माहिर थे । कोई दो घंटे बाद उन्होंने जहाज़ की ज़िम्मेदारी बालकों पर छोड़ दी और उन्हें समझा दिया कि अब क्या-क्या करना है । समीर ऐसी जगह पर बैठ गया था जहां से वह आते जहाज़ को पूरी तरह दिख सके ।

दरअसल, उसने अब वह चीज़ देखी जो और किसी की नज़र नहीं पड़ी थी । लुटेरे जहाज़ में से एक समुद्री चिड़िया निकली । वह सीधे व्यापारी जहाज़ की ओर उड़ी । समीर समझ गया कि अपूर्व ने आवश्यक संदेश भेज दिया है ।

लालू और उसके आदमी, पूरी तरह हथियारों से लैस, एक बड़े कमरे में छिपे बैठे थे । उन्होंने समीर को पहले ही बता दिया था कि वह सौदागर तथा उसके साथियों वगैरह को सीधा वहीं लायेगा ।

व्यापारी जहाज़ जैसे ही उनके जहाज़ के निकट आया, समीर ने मदद के लिए चिल्लाना शुरू कर दिया । उसने देखा कि व्यापारी जहाज़ की छत पर एक बहुत ही संभ्रांत व्यक्ति आ खड़ा हुआ और उसके साथ

कुछ हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति थे ।

समीर ने अब पुकार कर कहा, "इस जहाज़ पर केवल हम छः बालक ही हैं । हमारे अभिभावकों और जहाज़ के चालकों को लुटेरों ने मार डाला है । हमें बचाइए!"

वह जहाज़ और नजदीक आ गया । जल्दी ही एक लंबा-सा तख्ता दोनों जहाज़ों के बीच डाल दिया गया ताकि तख्ता पुल का काम करे । सौदागर तथा उसके चार सहायक उस पुल को पार करके लुटेरों के जहाज़ पर आ गये ।

"वे बदमाश कहां छिपे हुए हैं?" सौदागर ने समीर से आहिस्ता से पूछा । समीर ने उस कमरे की तरफ इशारा किया, लेकिन प्रत्यक्ष रूप से ज़ोर से बोला, "आप, इस कमरे की

तरफ चलें । लुटेरे जो कुछ नहीं लूट सके, वह वहां है । आप वह ले लें, पर हमें बचा लें ।"

"फिक्र मत करो, बच्चो! हम तुम्हारी ही मदद को आये हैं," सौदागर ने कहा । तब एकाएक उसने उस कमरे को ताला लगा दिया जहां लुटेरे छिपे हुए थे । फिर खिड़की में से झांकते हुए उसने कहा, "अब यह बात समझ लो, मूर्खो, जैसे ही तुमने यहां से भागने की कोशिश की या कोई और चाल चली, हम समूचे जहाज़ को आग लगा देंगे जिससे तुम यहीं भुन जाओगे । यह भी समझ लो कि मेरे पास पच्चीस हट्टे-कट्टे संरक्षक हैं । हमारे पास हथियार भी काफी मात्रा में हैं । तुम लोगों ने अब तक कई सौदागरों को लूटा है और मासूम यात्रियों को मौत के घाट उतारा है । लेकिन हर खुराफात का अंत तो होता ही है न । हमारे पास इतना तेल है कि तुम्हारे जहाज़ को तथा तुम्हें और तुम्हारे साथियों को जला कर राख कर दें । चुपचाप बैठे रहो । कल तक हम किनारे पर लग जायेंगे । तब तक तुम्हें सिर्फ पीने का पानी मिलेगा । खाने को कुछ नहीं मिलेगा । ज़रा-से भी हिले तो समझ लो तुम्हारी मौत आयी ।"

अब वहां पूरी तरह चुप्पी छा गयी थी । सौदागर के साथ वाकई काफी संरक्षक थे । दस तो उस कमरे की चौकसी कर रहे थे, बाकी के आदमी लुटेरे जहाज़ को अपने जहाज़ से बांध रहे थे ताकि उसे सही दिशा में ले जाया जा सके ।

बालकों की आंखों में खुशी के आंसू थे । समीर की नज़रें अपूर्व को ढूंढ़ रही थीं, पर वह कहीं दिख नहीं रहा था ।

"समुद्री चिड़िया के ज़रिये तुमने वह छोटा-सा, पर अर्थ-पूर्ण संदेश भेजने की कैसे व्यवस्था की?" उस संभ्रांत सौदागर ने समीर की पीठ थपथपाते हुए पूछा ।

"सच-सच कहूं, जनाब! मैंने नहीं, एक फरिश्ते ने भेजा था । वही हमारी मदद कर रहा है ।" समीर ने कहा ।

"वह कहां है?" उस सौदागर ने पूछा ।

"मुझे पता नहीं । पर उम्मीद है वह आप से मिलेगा ज़रूर," समीर ने उत्तर दिया ।

दोनों जहाज़ अब तट की ओर बढ़ रहे थे । (जारी)

अनंत का स्वाभिमान

अपनी धुन के पक्के राजा विक्रम फिर उसी पेड़ के पास पहुँचे । उन्होंने लाश को पेड़ की शाखा पर से उतारा, उसे अपने कंधे पर डाला, और हमेशा की तरह चुप्पी साधे श्मशान की ओर बढ़ने लगे । लाश में बैताल मौजूद था । उसने कहना शुरू किया:

"राजन्, आप हर बार पराजित होकर भी निराश नहीं होते। यह मुझे बड़ा आश्चर्यजनक लग रहा है । आपको मैं सावधान करना चाहता हूँ, इसलिए आपको एक बात बताना चाहता हूँ । कोई राजा, चाहे उसने कितनी भी विद्या ग्रहण की हो और चाहे वह कितना भी कुशल शासक हो, ज़रूरी नहीं कि वह उतना संस्कारवान और गर्वरहित भी हो । ऐसा सोचना ही गलत है । अगर आप किसी मित्र राजा के लिए इतना कष्ट उठा रहे हैं तो आपको तुरंत चेत जाना चाहिए । उदाहरण के तौर पर मैं आपको राजा हरीश

बैताल कथाएं

की कहानी सुनाने जा रहा हूँ जिसने अहंकार और मूर्खतावश अपने सहपाठी और स्वाभिमानी मित्र अनंत का अपमान किया । आप ध्यान से सुनें ताकि आपको यह रास्ता कठिन न लगे ।" और यह कहकर बैताल वह कहानी सुनाने लगा ।

हरीश महेंद्रगिरि के राजा श्रीधर की इकलौती संतान था । उसे विद्या-ग्रहण के लिए चित्रवन में रहने वाले आचार्य दिव्यानंद के आश्रम में भेजा गया ।

हरीश पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ आचार्य से विद्या ग्रहण करने लगा । आश्रम में और शिक्षार्थी भी थे । उनमें हरीश को अनंत विशेष रूप से प्रिय था । अनंत की जो बात उसे सबसे अच्छी लगती थी, वह थी उस का स्वाभिमान । इसी कारण दोनों के बीच मैत्री भी हो गयी ।

हरीश के पिता तो उस देश के राजा थे । इसलिए वह उसे बराबर बढ़िया पकवान और कीमती से कीमती वस्तुएं भेजा करते । ऐसे बढ़िया पकवान और कीमती वस्तुएं देखकर बाकी शिक्षार्थी हरीश से चींटियों की तरह चिपक जाते, पर अनंत ही उनमें ऐसा था जो हरीश के कहने पर भी कुछ स्वीकार नहीं करता था ।

इसी तरह कुछ वर्ष बीत गये । एक दिन आचार्य ने हरीश को बुलाया और बोले, "वत्स! तुम्हारा विद्या-ग्रहण अब पूरा हुआ । तुम राजधानी को लौट जाओ और राजपाट संभालो । हां, मैं एक बात तुम से चाहता हूँ कि तुम जनप्रिय शासक बनो और खूब नाम कमाओ ।"

जब हरीश राजधानी को लौटने को था तो उसने अनंत को अपने आलिंगन में ले लिया और उससे बोला, "मित्र, अब हम अलग होने जा रहे हैं । तुम से दूर रहना मेरे लिए दुःख की बात होगी । मेरी यादगार के तौर पर तुम यह माला रख लो," और उसने अपने गले से अपना मणिहार उतारकर अनंत की ओर बढ़ा दिया ।

लेकिन अनंत ने उसे लेने से इनकार कर दिया और बड़ी मृदुता से बोला, "मुझे इन मणिहारों की अपेक्षा तुम्हारी मित्रता प्रिय है । इसलिए तुम इसे वापस रख लो ।"

हरीश अपने हठ पर था,बोला, "मित्र, एक

बार तो मेरी बात मान लो । इस तुच्छ भेंट को ठुकराओ नहीं ।" और यह कहते हुए हरीश ने वह मणिहार अनंत के गले में डाल दिया । फिर बोला, "देखो, जब कभी तुम्हें ज़रूरत पड़े, यह मत भूलना कि हम एक यहां हैं । मुझे तुम हमेशा तत्पर पाओगे ।" और फिर राजकुमार हरीश राजधानी के लिए रवाना हो गया ।

हरीश को आश्रम छोड़े अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ था कि राजा श्रीधर ने हरीश का राज्याभिषेक कर दिया और उसे राजा बना दिया ।

उधर अनंत आश्रम में अपनी विद्या पूरी करने के बाद काम की खोज करने लगा । आखिर, उसे धनकाम नाम के एक बड़े ज़मींदार के यहां काम मिला तो सही, पर वह बहुत मामूली था । अनंत की विद्या के अनुरूप वह नहीं था । फिर भी पेट पालने के लिए उसे वह काम करना ही पड़ा ।

एक बार अनंत के यहां उसके पिता का एक मित्र आया । उसका नाम विश्वनाथ था । वह बूढ़ा था । अनुनयपूर्वक वह अनंत से बोला, "बेटे, तुम तो मुझे जानते ही हो । मैं इन दिनों बीमार हूँ । समय काटना मुश्किल हो रहा है । सुना है कि हमारे देश का राजा तुम्हारा सहपाठी और मित्र है । उससे कहकर मेरे पुत्र को उनके यहाँ कोई छोटा सा कार्य दिलवा दो । इससे हमारी बड़ी सहायता हो जायेगी ।"

अनंत विश्वनाथ को इनकार न कर

सका । उसने उसके पुत्र को अपने साथ लिया और राजा हरीश के यहां जा पहुंचा । राजा हरीश ने अनंत के कहने पर विश्वनाथ के बेटे को अपनी सेना में रख लिया । फिर उसने अनंत से उसके काम के बारे में पूछा । अनंत ने कहा कि उसका काम ठीक है और वह उससे पूरी तरह संतुष्ट है ।

विश्वनाथ के पुत्र का नाम प्रशांत था । जब प्रशांत को अनंत के कहने पर इस तरह राजा के यहां काम मिल गया, तब लोगों को अच्छी तरह राजा और अनंत के बीच की घनिष्ठता का पता चला ।

अनंत के गांव में वीरेश नाम का एक व्यक्ति था । वह राजा हरीश के दरबार में काम करता था । एक बार अधिकारियों ने

HI—F-4

विपरीत पड़ोस के राज्य में इफ़रात में होती है । इसलिए यदि हम वहां से कपास का आयात करें तो गरीबों को हम कपड़े सस्ते दामों पर दे सकते हैं । कपास के आयात के लिए राजा से अनुमति-पत्र चाहिए । इसकी यदि तुम व्यवस्था कर सको तो मैं तुम्हें बिना कोई पूंजी लगाये इस काम से प्राप्त होने वाले लाभ का चौथा हिस्सा देता रहूंगा ।"

अनंत थोड़ी देर तक सोचता रहा । फिर बोला, "आप जो करना चाहते हैं, वह एक नेक काम है । मुझे आपके लाभ से कोई हिस्सा नहीं चाहिए । मैं वैसे ही आपकी मदद करूंगा । यह मेरा कर्तव्य होगा ।"

श्रीकांत को ऐसा वचन देकर अनंत राजा हरीश से मिला और उसे सारी बात समझाकर उससे श्रीकांत के नाम कपास आयात करने का अनुमति-पत्र ले आया जिसे उसने श्रीकांत के हवाले कर दिया ।

श्रीकांत ने जैसे कहा था, बड़ी तादाद में वस्त्र तैयार करवाये और उन्हें गरीबों के लाभ के लिए सस्ते दामों पर बेचा । पर इससे भी उसे खूब लाभ हुआ । इसलिए अपने वचनानुसार उसने अनंत को लाभ का हिस्सा देना चाहा । पर अनंत ने यह कहकर इनकार कर दिया कि जो कुछ उसने किया, अपना कर्तव्य समझकर किया । इसकी खबर भी राजा तक पहुंच गयी ।

इसके बाद भी अनंत के पास अनेक लोग आते रहे और उस पर राजा से कोई-न-कोई काम करवाने के लिए दबाव डालते रहे । ऐसे

उसे घूस लेने रंगे हाथों पकड़ लिया । वह अनंत के पास आया और गिड़गिड़ाने लगा, "हम बचपन के साथी हैं । महाराजा से कहकर इस बार मुझे बख्शवा दो । आइंदा ऐसी गलती कभी नहीं होगी ।"

पर अनंत ने साफ मना कर दिया । बोला, "अपराध किया है तो उसका खमियाज़ा भी भुगतना पड़ेगा । अब भुगतो ।"

होते-होते यह खबर राजा तक भी पहुंची । अपने मित्र के इस आचरण पर वह बहुत खुश हुआ ।

इन्हीं दिनों अनंत के पास श्रीकांत नाम का एक बड़ा व्यापारी आया । अपना परिचय देते हुए उसने कहा, "तुम जानते हो हमारे राज्य में कपास बहुत कम पैदा होती है, और इसके

लोगों में अधिकतर लोग स्वार्थी थे । अनंत ने पहले यह कभी नहीं सोचा था कि राजा से उसकी मित्रता का इस तरह लाभ भी उठाया जा सकता है ।

अनंत का मालिक ज़मींदार धनकाम शुरू से ही अनंत के आचरण के बारे में देखता-सुनता आया था । अनंत का स्वाभिमान और उसकी ईमानदारी, इन दोनों का धनकाम पर काफी असर था । इन्हीं के कारण उसने अनंत को अपना दामाद बनाने का निर्णय किया था ।

लेकिन जब उसने अपना निर्णय अनंत तक पहुंचाया, तो अनंत ने फौरन एतराज़ किया और इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया । उसने कहा, "क्षमा करें, मैं आपकी बेटी के योग्य नहीं हूं ।"

धनकाम समझ गया कि अनंत बहानेबाज़ी कर रहा है । इसलिए उसने अपना प्रयास जारी रखा ।

एक दिन उसने एक बहुत बड़ी दावत की व्यवस्था की । उसमें नगर के बहुत से प्रमुख व्यक्ति मौजूद थे । धनकाम ने अनंत को एक तरफ ले जाकर कहा, "मुझे राजा को बड़ी मोटी रकम कर के रूप में देनी है । वक्त पर मेरे हाथ पर रकम नहीं लगी, इसलिए विलंब हुआ । मुझे खबर मिली है कि वह मेरे खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने जा रहा है । तुम राजा से मिलो और उससे कुछ अवधि बढ़ाने के लिए अनुरोध करो ।"

अनंत का उत्तर दो-टूक था, "कर की

समय पर अदायगी करना हमारा फर्ज़ बनता है । अपनी कठिनाइयों से उनका नाता जोड़कर, उन्हें समय पर नहीं चुकाना उचित नहीं है । इसलिए इस मामले में मैं महाराजा से कुछ नहीं कह सकता । मुझे क्षमा करें ।"

धनकाम के पास एक तर्क था । बोला, "अनंत, राजा ने वृद्धों और विधवाओं को नियमित रूप से कुछ धन-राशि देने का कार्यक्रम शुरू किया था । लेकिन उन लोगों तक राशि पहुंचने में हमेशा विलंब होता रहा । क्या राजा के लिए यह उचित था?"

"अवश्य उनकी गलती है," अनंत ने तुरंत उत्तर दिया, "लेकिन एक बात बताइए, अगर राजा से गलती हुई तो हमारे लिए गलती करना क्या ज़रूरी है?"

इस पर धनकाम ने धीरे-धीरे हंसते हुए कहा, "अनंत, इस दावत पर आये हुए अतिथियों में राजा के गुप्तचर भी हैं। वे हमारी बातचीत ज़रूर महाराजा तक पहुँचायेंगे। महाराजा की गलती की ओर इशारा करने के कारण ज़रूर तुम दोनों की मित्रता में अंतर आयेगा।"

"आप को गलतफहमी है।" अनंत ने उत्तर दिया, "मेरी आलोचना को वह आलोचना नहीं समझेंगे, बल्कि सच्चाई को पहचानते हुए वह ज़रूर अपनी त्रुटि को सुधारेंगे।"
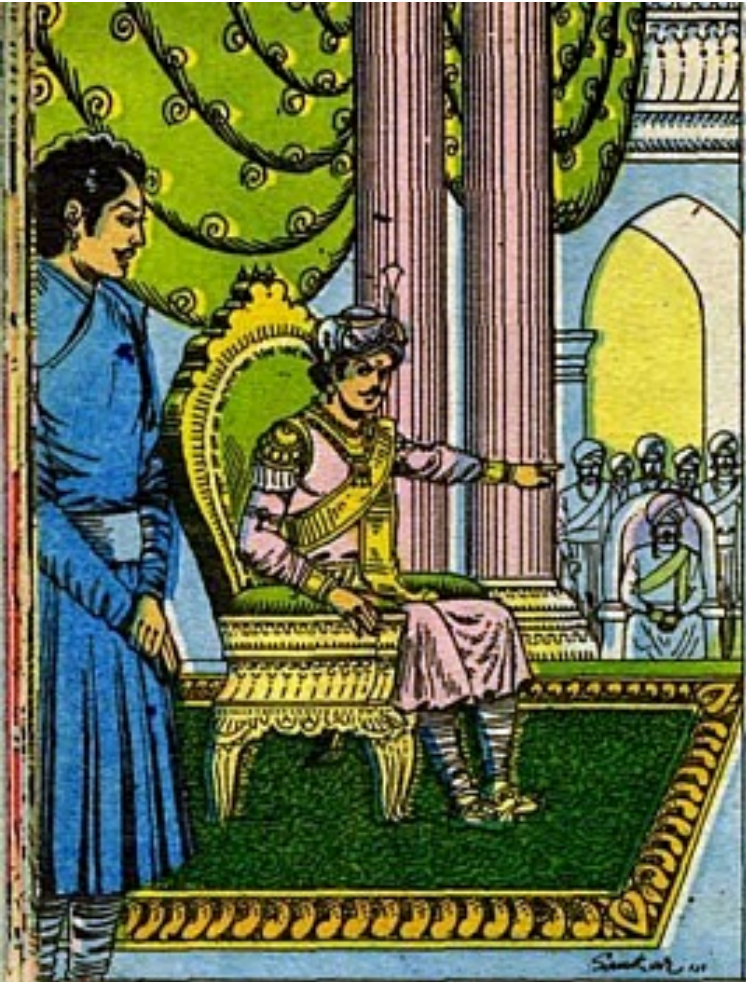
धनकाम भी अपनी बात पर अड़ा हुआ था। बोला, "खैर, तुम एक बार महाराजा से मिल लो। यदि उनके व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आया, तो समझूंगा कि तुम दोनों की मित्रता आदर्श है। और यदि ऐसा न हुआ तो तुम्हें हार माननी पड़ेगी और फिर मेरी बेटी से विवाह भी करना होगा। मेरी बात स्पष्ट है न?"

अनंत ने यह शर्त मंजूर कर ली। वह राजा से मिलने गया। राजा उसे देखते ही उस पर बरस पड़ा, "अनंत, तुम मेरे मित्र होते हुए मेरी ही आलोचना करने लगे। क्या समझते हो अपने आप को? अपनी हैसियत देखी है? मैंने बराबर अपने मित्र-धर्म का पालन किया, और तुम हो कि मुझ पर ही वार करने लगे। खूब नसीहत दी तुमने मुझे। अब जाओ यहां से, और फिर कभी अपनी सूरत नहीं दिखाना। बहुत हो गया अब।"

राजा हरीश के यहां से अनंत लौट आया, और राजा तथा उसके बीच जो कुछ घटा, वह सब उसने ज़मींदार धनकाम को शब्दशः कह सुनाया। साथ में उसने अपनी हार भी स्वीकार कर ली और हार स्वीकार करने के साथ उसे धनकाम की बेटी के साथ शादी भी करनी पड़ी।

बैताल ने यहां तक कहानी सुनाने के बाद कहा, "राजन्, चाहे अनंत एक छोटी-सी नौकरी करता था, पर उसने राजा का मित्र होते हुए भी राजा से कभी-कोई लाभ नहीं उठाया, हालांकि दूसरों का काम साधने में उसने कोई कसर नहीं उठा रखी और राजा से भी मदद ली। हां, जब उसे पता चला कि उसके बचपन का दोस्त और गांव का साथी

घूसखोरी में पकड़ा गया है, तो उसने उसकी कोई मदद नहीं की । उधर व्यापारी श्रीकांत ने उसे आयात से होने वाले लाभ में से हिस्सा देना चाहा, पर उसने साफ मना कर दिया । इतना सब जानते हुए भी राजा अपनी रत्ती-सी आलोचना भी नहीं सह सका, और अनंत के सच्चाई बयान करने पर उससे बुरी तरह से नाराज़ हो गया । अब इसे क्या कहा जाये? अहंकार या मूर्खता, या कुछ और? कृपया इन संदेहों को स्पष्ट कीजिए । इनका उत्तर जानते हुए भी यदि आप नहीं देंगे तो आपका सर फट जाएगा ।"

अब राजा विक्रम को उत्तर देना ही पड़ा । बोले, "सहपाठी और मित्र होने के कारण राजा हरीश, अनंत के स्वभाव से अच्छी तरह परिचित था । वह जानता था कि अनंत घोर स्वाभिमानी है, और उतना ही ईमानदार भी । वह जो नौकरी कर रहा था, वह बहुत छोटी थी । अगर राजा उसे बड़ी नौकरी देना भी चाहता तो भी वह स्वीकार न करता । यह बात राजा अच्छी तरह जानता था । इसीलिए उसने ऐसा कोई प्रयत्न नहीं किया । राजा से अनंत की मित्रता का लाभ उठाने के लिए कई स्वार्थी लोग अनंत पर दबाव डालते थे । राजा को इस सब की जानकारी थी । राजा को यह भी पता चल गया था कि अनंत इन दबावों से मुक्त हो और ज़मींदार की बेटी से शादी करके सुख जीवन व्यतीत करे । अनंत को रास्ते पर लाने का राजा के पास केवल एक ही तरीका था कि वह अनंत पर गुस्सा होने का ढोंग रचे । इसीलिए राजा ने यह नाटक किया । इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हमें मानना पड़ेगा कि राजा अहंकारी या मूर्ख या कुछ और नहीं था, बल्कि बुद्धिमान, स्नेहशील और सदाशयी था ।"

राजा विक्रम के उत्तर देने से उसका मौन भंग हो चुका था, इसलिए बैताल शव-समेत वहां से तुरंत ग़ायब हो गया और फिर उसी पेड़ की शाखा से जा लटकने लगा । (कल्पित)

(आधार : एन.आर. शिवनागेश की रचना)

कंजूसों का कंजूस

ज़मींदार जगमोहन अव्वल दर्जे का कंजूस था । जब भी वह कभी मंदिर में जाता, वहां वह भगवान पर नारियल चढ़ाना या पुजारी की थाली में कुछ दक्षिणा डालना या जूतों की रखवाली करनेवाले लड़के को कुछ देना इत्यादि हमेशा भुला देना ।

ज़मींदार की कंजूसी से पुजारी सियाराम अच्छी तरह परिचित था । इसलिए वह भी मुंह खोलकर ज़मींदार से कभी कुछ नहीं मांगता था ।

पर्व का दिन था । इस दिन मंदिर में आने वालों में ज़मींदार जगमोहन सबसे पहला था । उस दिन जाने कैसे उसने पुजारी की थाली में एक पैसा दक्षिणा-स्वरूप डाल दिया ।

पुजारी का मन इतनी छोटी दक्षिणा पाकर थोड़ा दु:खी हुआ । उसे लगा कि दिन की शुरुआत ठीक नहीं हुई । इस बार वह चुप न रह सका । वह ज़मींदार से बोला, "आप जैसा इतना बड़ा ज़मींदार हो, और केवल एक पैसा दक्षिणा में दें, इससे बढ़कर मेरा अपमान और क्या होगा! आप कृपया एक पैसा तो और दें!"

पुजारी की बात सुनकर ज़मींदार जगमोहन चिढ़ गया और बम की तरह फटते हुए बोला, "एक पैसा और देकर मैं आपका दुबारा अपमान नहीं करना चाहता ।" और यह कहकर उसने पुजारी की थाली से पहले वाला पैसा भी उठा लिया । पुजारी उसका मुंह देखता रह गया ।

–गोमती

भारत के देवगण :

महाकाली

पुरातन काल के ऋषियों की कल्पनाएँ और अवधारणाएँ बहुत ऊँची उछाल भरती थीं । उन्होंने देवी माँ में सुख और शांति का स्वरूप ही नहीं देखा, बल्कि उस में विकराल रूप भी देखा, विशेषकर तब जब उसे झूठ और पाप को नष्ट करना होता है । काली या महाकाली उसी देवी रूप का एक पहलू है । दैवी इच्छाशक्ति सृजन होते समय ही काम नहीं करती, बल्कि नाश के समय भी काम करती है ।

काली को काले रंग की, चार भुजाओं वाली, शेर की खाल ओढ़े और नरमुंडों की माला पहने दिखाया जाता है । जो व्यक्ति इस भय पैदा करनेवाले स्वरूप की, बालक का अपनी माँ के प्रति पूरे विश्वास के भाव से, पूजा करता है, उसे उस स्वरूप में सौष्ठव और करुणा के दर्शन होते हैं ।

दीवाली से कुछ ही पहले माँ काली के आविर्भाव का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है ।

तेरह वर्ष की उम्र में स्नातक

भारत के एक बालक ने अमरीका में नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं और इस तरह इतिहास में अपना नाम जोड़ा है । इस बालक का नाम है बालामुरली कृष्णा अंबाटी । उसे न्यूयार्क विश्वविद्यालय ने जीवविज्ञान में स्नातक की उपाधि दी है । उसकी उम्र केवल तेरह वर्ष है । विश्वविद्यालय के १६० साल के इतिहास में यह सबसे छोटा स्नातक है ।

विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह मई के महीने में हुआ । उस समय वहाँ १०,००० से ऊपर उपाधि पाने वाले विद्यार्थी तथा उनके माता-पिता और मित्र उपस्थित थे । बाला को न केवल स्नातक का प्रमाणपत्र मिला, बल्कि चांदी की एक सजधज वाली टार्च भी मिली ।

बाला के माता-पिता, दोनों ही भारत में शिक्षक हैं । वे शुरू से ही उसे ज़्यादा सृजनशील होने के लिए प्रोत्साहित करते रहे । इसके पीछे एक ज़बरदस्त कारण था । बाला अभी मुश्किल से चार वर्ष का था कि उसने कैलकुलस के बुनियादी सिद्धांतों पर पूर्ण अधिकार पा लिया था ।

जब वह ग्यारह वर्ष का था, तो उसने और उसके भाई जयकृष्ण अंबाटी ने, जो बाला से छः वर्ष बड़ा है, 'एड्स' पर एक पुस्तक प्रकाशित की । यह भी अपने आप में एक कीर्तिमान है ।

यही एक समय था जब उसने न्यूयार्क विश्वविद्यालय में दाखिले के लिए प्रार्थना-पत्र दिया । अपना परिचय उसने 'अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर एक अद्भुत बालक' के रूप में दिया ।

उसका लक्ष्य क्या है? १८ वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते डॉक्टर की उपाधि प्राप्त कर लेना और एक इज़राइली द्वारा स्थापित किये गये रिकार्ड (कीर्तिमान) को तोड़ना । इज़राइल का वह बालक १८ वर्ष की उम्र में डॉक्टर की उपाधि पाने वाला विश्व का सबसे छोटा बालक था ।

जीवविज्ञान का यह नन्हा शास्त्री समय के विरुद्ध दौड़ रहा है । आओ, भावभीने ढंग से इसका अभिवादन करें और इसकी सफलता की कामना करें ।

क्या तुम जानते हो?

१. पुरातन काल में किस भारतीय गणितज्ञ ने शून्य की खोज की?
२. समुद्री घोड़ा 'घोड़ा' नहीं होता। तो यह क्या होता है?
३. टोकियो का पुराना नाम क्या था?
४. सन् ३१२ इसवीं में कॉन्सटेंटाइन ने रोम में एक सिक्का चलाया था जो १४०० साल तक चलता रहा। वह सिक्का क्या था?
५. संसार का सबसे बड़ा पुस्तकालय कौन-सा है?
६. वह कौन-सा सम्राट था जिसका जन्म यूरोप में हुआ, मृत्यु एशिया में हुई और जिसे अफ्रीका में दफनाया गया?
७. शेक्सपियर का सबसे लंबा नाटक कौन-सा है?
८. एक देश के झंडे पर उसकी भौगोलिक रूपरेखा अंकित है। वह देश कौन-सा है?
९. ऐडमंड हिलेरी और तेनसिंह नोर्के ने जब एवरेस्ट की चोटी पर विजय प्राप्त की तो वहाँ उन्होंने चार झंडे फहराये। वे झंडे कहाँ-कहाँ के थे?
१०. हेनरी आर्चर ने डाक टिकटें छापने केलिए एक विशेष विधि खोज निकाली। उस विधि का नाम क्या है?
११. गैलिलियो की पहली वैज्ञानिक खोज क्या थी?
१२. कैंब्रिज में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के लिए चार्ल्स डार्विन ने कौन-सा विषय लिया था?
१३. भारत में पहली बार अमरीका का कौन सा राष्ट्रपति आया था?
१४. पृथ्वी को सूरज का पूरा चक्कर काटने में कितना समय लगता है?
१५. एवरेस्ट पर्वत मुख्यतया किस पदार्थ का बना है?

उत्तर

१. आर्यभट्ट।
२. यह एक समुद्री मछली है जिसका सर घोड़े की शक्ल का होता है। यह खड़े में तैरती है।
३. ईडो।
४. सोलिडस।
५. मास्को में लेनिन राज्य पुस्तकालय।
६. सिकंदर महान्। इसका जन्म मैसेडोनिया, यूनान में हुआ था। इसकी मृत्यु बगदाद (एशिया) के निकट बैबीलोन में हुई थी और उसे अलैक्ज़ेंडरिया (मिस्र, अफ्रीका) में दफनाया गया।
७. हेमलेट, जिसकी शब्द संख्या २९,५०० से अधिक है।
८. साइप्रस।
९. संयुक्त राष्ट्र, ब्रिटेन, नेपाल तथा भारत।
१०. पैरफोरेटिंग मशीन।
११. लंगर (पैंडुलम)।
१२. धर्म ज्ञान।
१३. ड्वाइट डी. आइसनावर, १९५६ में।
१४. ३६५ दिन; ५ घंटे; ४८ मिनट और ४६ सैकंड में।
१५. चूना पत्थर।

चंदामामा की खबरें

लंदन के चिड़ियाघर से सहायता के लिए पुकार

लंदन का १६० साल पुराना चिड़ियाघर इन दिनों बुरे वक्त से गुज़र रहा है ।यह दुनिया का सबसे पुराना चिड़ियाघर है । पिछले दो वर्षों में इसे भारी नुकसान उठाना पड़ा है । अपने को बनाये रखने के लिए इसे चार करोड़ पाउंड की ज़रूरत है ।

ब्रिटेन की सरकार ने अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखायी । चिड़ियाघर के प्रशासकों ने इसलिए विश्व के सभी पशु-प्रेमियों, विशेषकर पिग्गी बैंक चलाने वाले बालकों से अनुरोध किया है कि वे सहायता-राशि भेजें । दूसरा तरीका यह हो सकता है कि इस चिड़ियाघर को बंद कर दिया जाये और छोटे पशुओं को दूसरे चिड़ियाघरों में भेज दिया जाये ।

ईश्वर की भाषा

बाइबल में ईश्वर की वाणी है । इसका विश्व की ज्ञात भाषाओं में अनुवाद हो चुका है । लेकिन जिस भाषा में हज़रत ईसा ने अपना प्रचार किया था, उस

भाषा का लगभग नामोनिशान मिट चुका है । उस का नाम है ऐरामयिक । यह दमिश्क (सीरिया) के उत्तर में मालूला नगर में तथा उसके आसपास, कुछ ही हज़ार व्यक्तियों द्वारा, बोली जाती है । क्योंकि इसकी कोई वर्णमाला नहीं है, इसलिए इसे कोई लिख या पढ़ नहीं पाता । यह भाषा इसलिए बची रह गयी, क्योंकि इसे ज़बानी पढ़ाया जाता है ।.सीरिया की सरकारी भाषा अरबी है । इसके साथ-साथ वहाँ सीरिक और हिब्रू भाषाएँ भी चलती हैं ।

गौल्फ खेल में गाय का पुरस्कार

मलेशिया में एक गौल्फ टूर्नामेंट हुआ । वहाँ न कोई नकद पुरस्कार दिया गया और न ही कोई ट्रॉफी । सर्वप्रथम विजेता को गाय मिली, दूसरे और तीसरे स्थान पर रहने वालों को भेड़ें और चौथा और पाँचवाँ स्थान पाने वालों को खरगोशों के जोड़े दिये

गये । उस खिलाड़ी के लिए जो 'होल-इन-वन' पा सके, एक घोड़े तथा एक चार पहियों वाली गाड़ी का पुरस्कार रखा गया । लेकिन इस पुरस्कार को पाने वाला कोई नहीं था ।

इस तरह के पुरस्कार देने का यह अद्भुत विचार, दरअसल, वहाँ के कृषि मंत्री का था जो चाहता था कि अमीरों का यह खेल खेलने वाले खिलाड़ी कृषि के और निकट आयें ।

जादुई कान

किसी समय जापान में सागर के किनारे एक गांव में एक नौजवान रहता था। एक दिन वह सागर के किनारे-किनारे चल रहा था कि उसे रेत के बीच एक गड्ढ़े में एक मछली तड़पती दिखाई दी। ज्वार-भाटे में लहरों के साथ वह वहां बहती चली आयी थी और फिर सागर में लौट नहीं पायी थी।

नौजवान को मछली पर दया आयी। उसने उसे गड्ढ़े में से निकाला और वापस समुद्र में छोड़ दिया। फिर वह वहां से जाने को हुआ। तभी पीछे से किसी की आवाज़ सुन पड़ी, "रुको ज़रा।"

नौजवान ने पीछे मुड़कर देखा। समुद्र में एक युवती खड़ी थी।

युवती बोली, "मुझे सागर राजा ने तुम्हारे पास भेजा है। तुमने उसकी पुत्री की जान बचायी है। इसलिए उसने तुम्हें लिवा लाने को कहा है। तुम कृपया मेरे साथ चलो।"

दोनों जब समुद्र में दाखिल हो चुके थे, युवती मछली में परिवर्तित हो गयी। नौजवान मछली की पीठ पर बैठ गया। मछली सागर राजा के महल की ओर बढ़ चली। रास्ते में वह नौजवान से बोली, "सागर राजा अगर तुम्हें कोई भेंट देने की बात कहें तो तुम उससे जादू का कान मांगना। उस जादू के कान को जब तुम अपने कान में लगाओगे तो तुम हर प्राणी की बात सुनने और समझने लगोगे।"

नौजवान जब राजा के पास पहुंचा तो उसका खूब जमकर सत्कार हुआ। नाच-गाने की व्यवस्था भी की गयी।

नौजवान को सागर राज्य में आये काफी दिन हो गये थे, इसलिए उसने राजा से अब वापस जाने के लिए आज्ञा चाही।

राजा ने कहा, "ठीक है, लेकिन तुम्हें वापस भेजने से पहले मैं तुम्हें एक भेंट देना चाहता

जापान की लोककथा

हूं । तुम्हें जो भी पसंद हो, मांग सकते हो ।"

"मुझे जादू का कान दे दीजिए । बस, उतना ही मेरे लिए काफी है ।" नौजवान ने तत्परता से कहा ।

"इस सागर में ऐसा कान केवल एक ही है । वह अद्भुत है । मैं तुम्हें इनकार नहीं कर सकता । इसलिए वह मैं तुम्हें अवश्य दूंगा ।"

इतना कहकर सागर राजा ने एक गुप्त स्थान पर रखे उस कान को मंगवाया और उसे उस नौजवान के हवाले कर दिया ।

जिस मछली की पीठ पर बैठकर वह नौजवान सागर राजा तक पहुंचा था, उसी की पीठ पर बैठकर अब वह वापस सागर के किनारे जा रहा था । मछली उसे किनारे पर छोड़कर सागर राज्य को लौट गयी ।

सागर के किनारे पहुंचकर वह नौजवान वहीं अकेला बैठा रहा । इतने में कुछ गौरैयां वहां चहचहाने लगीं । नौजवान के मन में आया कि वह गौरैयों की बात सुने कि वे क्या कह रही हैं । इसलिए उसने छोटे-से शंख के आकार के उस जादुई कान को अपने कान में रख लिया । तुरंत उसे गौरैयों की हर बात समझ में आने लगी । एक गौरैया कह रही थी :

"ये लोग अपने को बड़ा बुद्धिमान समझते हैं, लेकिन मुझे तो लगता है ये बिलकुल बुद्धिमान नहीं हैं । अब जिस पत्थर पर पैर रखकर ये लोग वह पास का झरना पार करते हैं, वह पत्थर नहीं, खरा सोना है । इसे इन लोगों ने अभी तक पहचाना ही नहीं ।"

नौजवान के कान में जब यह बात पड़ी तो
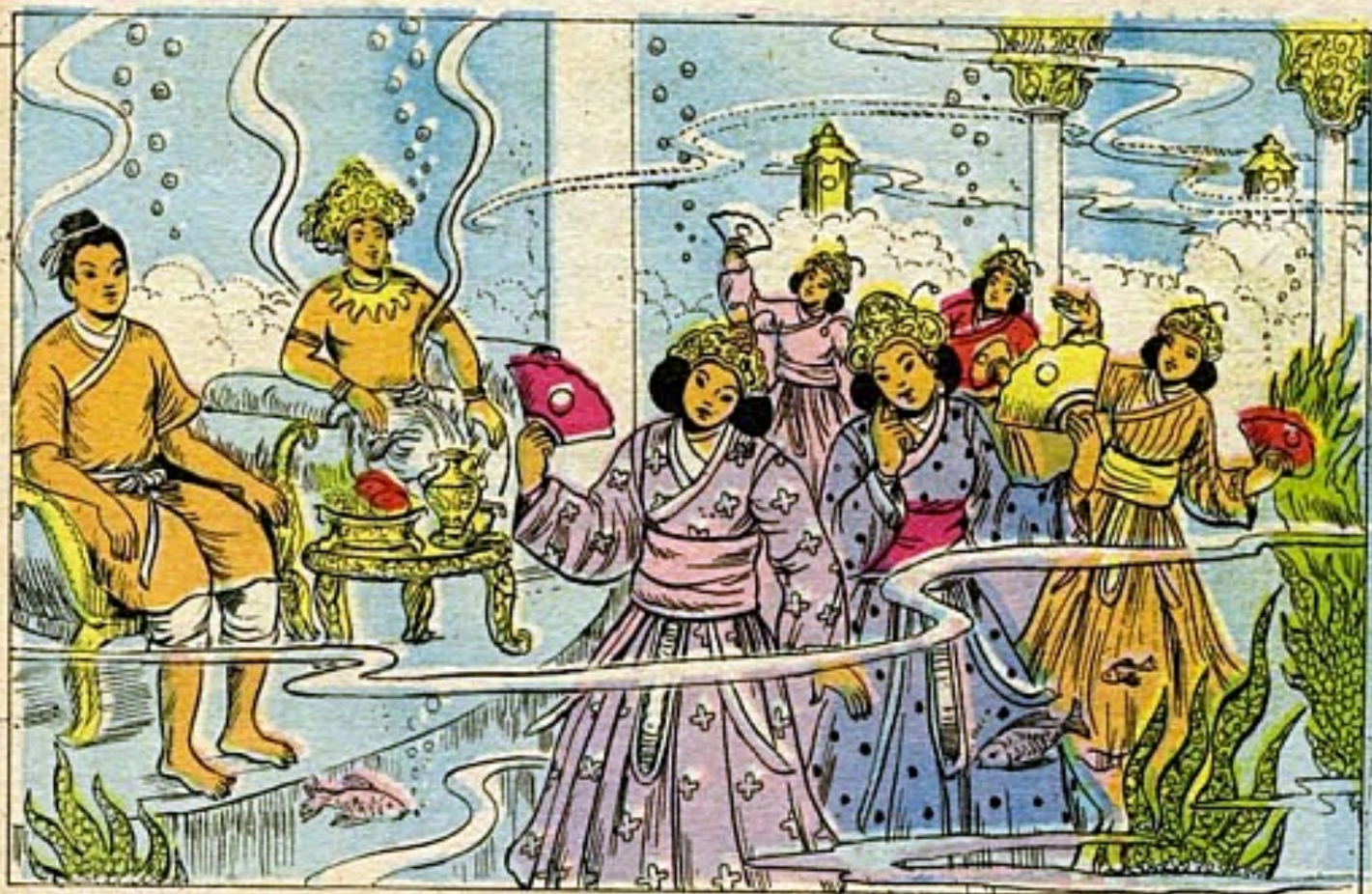
उसे बड़ी हैरानी हुई । वह उस झरने की तरफ बढ़ा । झरने पर पहुंचकर उसने उस पत्थर को उठाया जिस पर हर कोई पांव रखकर निकलता था । फिर उसने उस पर जमी काई को हटाया और पत्थर को साफ किया । वाकई, वह सोना था । वह चमचम चमकने लगा । उसे विश्वास हो गया कि गौरैयां किसी प्रकार भी झूठ नहीं कह रही थीं ।

उसने उसे एक कपड़े में लपेटा और उसे लिये-लिये अपने घर लौटा । इतने में दो कौए चीखने लगे । नौजवान ने उस जादुई कान को फिर अपने कान से लगाया । उसे कौओं की बातें समझ में आने लगीं । वे कह रहे थे:

''ये मानव निरे मूर्ख हैं । कहां-कहां से वैद्यों को बुलाया गया, पर ज़मींदार की बेटी की बीमारी ज्यों की त्यों रही । वह जाती भी कैसे? वह दवा-दारू से ठीक होगी ही नहीं । ज़मींदार के घर पर जब घास-फूंस को उलटाया जा रहा था, तो गलती से उसमें एक सांप फंस गया था जिसे घास-फूंस के साथ ही बांध दिया गया । बिना आहार के वह सांप सूखता जा रहा है । अब जब तक उसे छुड़ाकर आहार नहीं दिया जायेगा, वह लड़की कभी ठीक नहीं होगी और ऐसे ही रोगी बनी पड़ी रहेगी ।''

कौओं की बातें सुनकर नौजवान खुश हुआ । वह वहां से सीधा जमींदार के घर की तरफ़ बढ़ा ।

ज़मींदार के घर के बाहर एक तख्ती पर लिखा हुआ था– 'मेरे बेटी की बीमारी दूर करके उसे जो ठीक कर देगा, मुंह-मांगा

इनाम उसे दिया जायेगा ।'

नौजवान ज़मींदार के घर के भीतर चला गया, और वहां बैठे लोगों से बोला, "मैं बीमार लड़की का इलाज करने आया हूं । मैं उसे बिलकुल ठीक कर दूंगा ।"

वहां कुछ वैद्य भी बैठे थे । वे उसकी बात सुनकर ठठाकर हंस दिये । बोले, "हम जिस रोग को पकड़ने के लिए इतने दिनों से झक मार रहे हैं, उसका यह पता लगायेगा! शक्ल तो देखो इसकी!" और वे उसकी खिल्ली उड़ाने लगे ।

लेकिन ज़मींदार का रवैया बिलकुल दूसरा था । वह हर उस शख्स का स्वागत करता जो उसकी बेटी को ठीक करने की बात कहता । न जाने किस रूप में निदान मिल जाये ।

नौजवान भीतर कमरे में गया जहां ज़मींदार की बेटी लेटी थी । उसे देखते ही वह बोला, "यह रोग नहीं, शाप है । कहीं जीव-हत्या होने जा रही है । इस घर की छत पर, घास-फूंस में बंधा एक सांप भूख-प्यास से व्याकुल, मरने के करीब पहुंच चुका है । उसे फौरन मुक्त करके दूध पिलाया जाये । यह शाप खुद-ब-खुद खत्म हो जायेगा ।"

नौजवान की बात सुनकर ज़मींदार ने अपने नौकरों को बुलाया और उन्हें छत पर घास-फूंस में बंधे सांप को मुक्त करने का आदेश दिया । छत से जब घास-फूंस को हटा कर उसे खोला गया तो उसमें से वाकई एक अधमरा सांप निकला । उसे फौरन मुक्त किया गया और दूध पिलाया गया । दूध पीते ही सांप की जान आ गयी । वह जैसे ही रेंगकर कमरे से बाहर जाने को हुआ, वैसे ही ज़मींदार की बेटी उठकर बैठ गयी ।

सांप अब वहां से जा चुका था । इधर ज़मींदार की बेटी भी बिलकुल भली-चंगी हो उठी थी ।

ज़मींदार बहुत खुश था । वह उस नौजवान पर गद्‌गद था । उससे बढ़कर उसकी बेटी के लिए दूसरा वर और कौन हो सकता है! उसने उसी से अपनी बेटी का विवाह करने का निश्चय कर लिया ।

नौजवान के भाग्य का सितारा अब पूरी तरह चमक उठा था ।

गुरु की परीक्षा

एक था भार्गव । वह एक पटेल था । उसके काफी इंतज़ार के बाद एक बेटा हुआ । बेटे का नाम उसने दीपक रखा । दीपक भार्गव का सब कुछ था । भार्गव चाहता था कि दीपक को किसी योग्य गुरु से दीक्षा मिले ताकि बड़ा होकर वह हर क्षेत्र में प्रवीण हो । लेकिन ऐसा योग्य गुरु मिले कहां ! बस, इसी पर भार्गव विचार करने लगा ।

दीपक कुशाग्रबुद्धि था, तेज़ था । एक बार सुन लेता तो उसे कभी भूलता नहीं था । उम्र से ज़्यादा वह होशियार था । जो सवाल करता, उसमें बड़ा वज़न होता । उसके पिता के लिए उन सवालों का जवाब दे पाना मुश्किल हो जाता । औरों के लिए भी उनका जवाब दे पाना असान नहीं था । ऐसी बुद्धि वाले बालक के लिए साधारण गुरु काफी नहीं था । उसके लिए एक विशिष्ट गुरु की ज़रूरत थी । इसीलिए भार्गव एक ऐसे ही गुरु की तलाश में था । कहने को तो उस गांव में एक गुरुकुल था, पर भार्गव वहां के गुरुजन की क्षमता से अच्छी तरह परिचित था ।

उस गांव से दो योजन दूर एक और गांव था । उसका नाम था शिलापीठ । वहां कर्मठ नाम का एक वृद्ध व्यक्ति एक गुरुकुल चला रहा था । लोगों की राय थी, कि उस गुरुकुल में शिक्षा पाने वाले हर छात्र की प्रतिभा निखर उठती है ।

लेकिन भार्गव को इस उक्ति पर संदेह था । यदि कर्मठ वाकई इतना कुशल शिक्षक है तो वह उस गांव में ही क्यों पड़ा रह गया? गांव के लोग, आखिर, उसे क्या दे पाते होंगे? और यदि वह सचमुच इतना कुशल है, तो एक-न-एक दिन वह ज़रूर गांव छोड़कर शहर पहुंच जायेगा । पर भार्गव अपने बेटे को शहर के किसी गुरुकुल में छोड़ना नहीं

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी
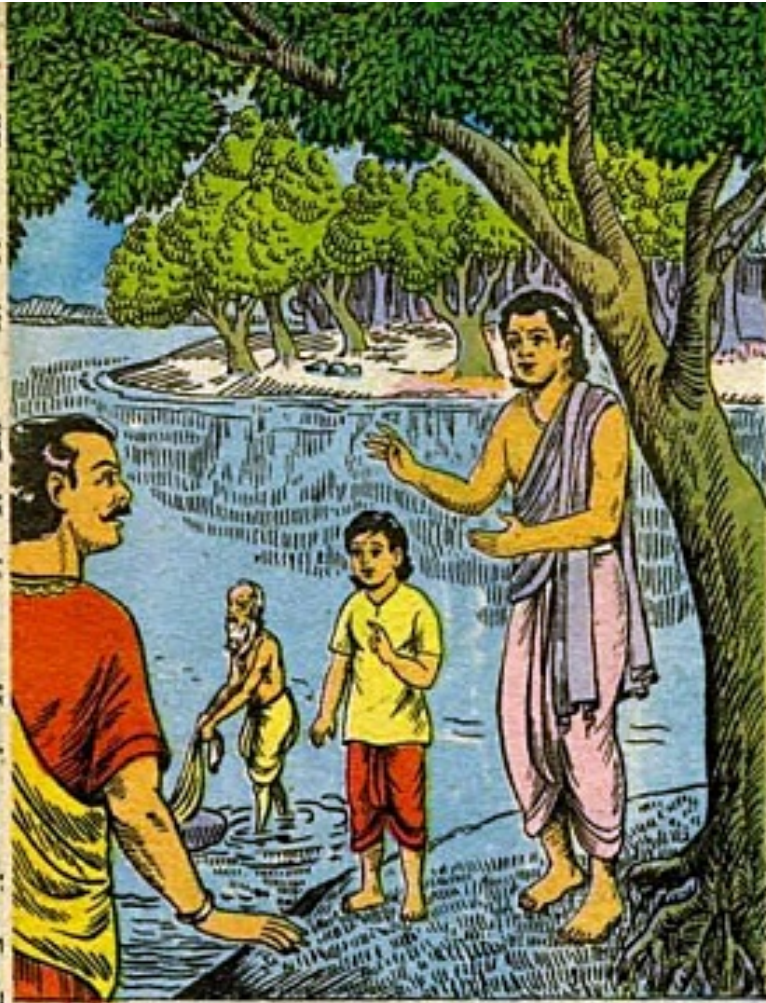
चाहता था, क्योंकि बेटे की जुदाई उसके लिए असह्य थी ।

उसके मन में एक विचार आया । जब हर कोई कर्मठ के गुरुकुल की प्रशंसा करता है तो ज़रूर वह एक बढ़िया गुरुकुल होगा । उसे लगा कि एक बार उसे उस गुरुकुल को देख आना चाहिए । शुभ मुहूर्त निकलवाकर और साथ में कुछ भेंट लेकर वह अपने बेटे को वहां लिवा ले गया । जब तक वह वहां पहुंचा, तब तक अंधेरा उतर चुका था और गहराता जा रहा था ।

भार्गव ने कर्मठ के लिए पूछताछ की । पता चला कि वह पास के तालाब पर स्नान करने गये हैं । घर में उनकी पत्नी और पुत्र थे । उन्होंने उसका खूब सत्कार किया ।

भार्गव ने अब स्वयं उस तालाब के पास जाने की इच्छा व्यक्त की । उसकी अगवानी के लिए कर्मठ का बड़ा बेटा और उस बेटे का छः वर्षीय बेटा उसके साथ चल पड़े । वे जब तालाब पर पहुंचे तो उन्हें गुरु कर्मठ वहां कपड़े धोते दीख पड़े । उनके निकट पहुंचकर भार्गव ने उनका अभिवादन किया ।

कुशल-क्षेम के बाद भार्गव ने गुरु से प्रश्न किया, "गुरुवर, क्या आपको दो विशिष्ट रंगों में से सिर्फ दूसरा रंग ही बहुत प्रिय है?"

"दोनों ही बहुत प्रिय हैं । यह नहीं तो वह नहीं, वह नहीं तो यह नहीं," गुरु ने यह उत्तर दिया था ।

पास ही गुरु का पोता खड़ा था । भार्गव ने उस बच्चे को संबोधित करते हुए कहा, "बालक, क्या हमारी बात तुम्हारी समझ में आ रही है?"

"क्यों नहीं," उस बालक ने तत्परता से उत्तर दिया, "आपने मेरे दादा जी से यह पूछा है कि क्या दिन से आपको रात ज़्यादा अच्छी लगती है? दादाजी का कहना था कि उन्हें दोनों ही प्रिय हैं ।"

भार्गव ने अब गुरु से प्रश्न किया, "जब संपूर्ण बारह हैं, तब आप जैसे वयोवृद्ध को छठे हिस्से में इस प्रकार कष्ट उठाने की क्या ज़रूरत है?"

गुरु का उत्तर था, "मेरे जन्म के बाद, मरकर फिर जन्मे बत्तीस अब तक स्वस्थ हैं, इसलिए यह सब ।"

"इसका क्या अर्थ निकाला आपने?"

भार्गव ने अब गुरु कर्मठ के पुत्र से मुखातिब होकर पूछा था, "यानी मेरा प्रश्न क्या था, और आपके पिता जी का उस का उत्तर क्या था?"

गुरु-पुत्र का उत्तर इस प्रकार था, "आपने मेरे पिता जी से पूछा कि इस शिशिर ऋतु में और इस वृद्धावस्था में वह क्यों इतना कष्ट उठा रहे हैं। इसके जवाब में मेरे पिताजी का उत्तर था कि उनकी बत्तीसी अभी क़ायम है जिसकी वजह से उनकी पाचन-शक्ति ठीक है। इसीलिए इस ठंड को भी वह बड़ी आसानी से सह सकते हैं।"

भार्गव ने अब फिर गुरु कर्मठ की ओर देखकर इस तरह प्रश्न किया, "अकसर घर को बनाकर उसे गिराने वाले कितने हैं?"

गुरु का उत्तर था, "ऐसा काम कर करके जो छोड़ चुके हैं, वे चार हैं। अब उनकी तरफ के लोग यह काम बड़े आराम से कर रहे हैं।"

इसका भी अर्थ गुरु-पुत्र ने ही समझाया, "आपने मेरे पिताजी से पूछा कि आपके घर में बच्चे कितने हैं। और मेरे पिता जी का उत्तर था कि उनके चार बेटे हैं और कई पोते हैं।"

अब भार्गव ने फिर गुरु से पूछा, "महोदय, मैं सोचता हूं, आप अकसर कांतिकन्या को लाते होंगे। क्या मेरी यह बात सच है?"

गुरु कर्मठ ने भार्गव के प्रश्न का इस प्रकार उत्तर दिया था, "नहीं, कांतिकन्या को लाता तो उसे वस्त्र-भूषणों के साथ विदा करना पड़ता। इसलिए हम अपनी कन्या पर ही निर्भर रहते हैं। वही हमारे लिए काफी है।"

गुरु-पुत्र ने इसका अर्थ भार्गव की ओर मुखातिब होकर इस प्रकार बताया, "आपका प्रश्न था कि क्या घर के खर्चे के लिए पैसे जुटाने के लिए कर्ज़ भी उठाना पड़ जाता है। पिताजी का उत्तर था कि नहीं, अपनी आय से ही गुज़ारा करते हैं।"

भार्गव का प्रश्न करना अभी जारी था। उस ने गुरु कर्मठ से फिर पूछा, "सहारा तो कल्पवृक्ष का लेना चाहिए। क्या तिनके का सहारा लेना ठीक है?"

इस सवाल पर गुरु कर्मठ हंस पड़ा और उसका जवाब भी दिया।

"कल्पवृक्ष के बिना तिनके को ठौर कहां

मिलेगा! तिनकों को जब इकट्ठा करते हैं, तभी कहीं जाकर सफाई हो पाती है, और सफाई ही खुशहाली लाती है ।" कर्मठ का यह उत्तर था ।

गुरुपुत्र हर प्रश्न-उत्तर की व्याख्या किये जा रहा था । बोला, "आप ने पिताजी से पूछा कि वह राजाश्रय के बिना गांव में क्यों पड़े हुए हैं, तब पिताजी का जवाब यह रहा— राजाश्रय के बिना कोई गांव टिका नहीं रह सकता । यदि मैं ही गांव का अहित करूं तो उसका उद्धार कौन करेगा? सभी ग्रामवासी विद्या प्राप्त कर यदि मिल-जुलकर रहें तो गांव की उन्नति होगी और गांव के बुद्धिमानों को राजाश्रय भी मिलेगा । पिता जी का यही उत्तर था ।"

इसी बींच गुरु कर्मठ की तीन-वर्षीया पोती वहां तालाब पर आ पहुंची और एकाएक प्रश्न करने लगी ।

भार्गव उस बालिका के प्रश्नों से काफी प्रभावित हुआ । बोला, "बेटी, मैं तुम से एक ही एक सवाल पूछूंगा । तुम उसका उत्तर दोगी न?"

"पूछिए न ।" वह नन्हीं बालिका बोली ।

"मौन रहने के लिए क्या चाहिए?" भार्गव ने प्रश्न किया ।

"शोर मचाना चाहिए ।" बालिका ने फुर्ती से उत्तर दिया, और इसके साथ ही वह वहां से यह जा, वह जा ।

सब हंसने लगे । भार्गव उस बालिका के चतुर उत्तर पर चकित हुआ ।

अब भार्गव के सारे संदेह दूर हो चुके थे । उसने अपने बेटे को तुरंत गुरुकुल में दाखिल करवा दिया ।

समय के साथ भार्गव का पुत्र बड़ा विद्वान होकर उसने अपने नाम के अनुरूप दीपक-सा चमककर अपने कुल का नाम रोशन किया । इससे उसके पिता की कीर्ति भी चारों ओर खूब फैली ।

रावण के आदेशानुसार प्रहस्त ने हनुमान से वैसे ही प्रश्न किये जैसे कि रावण ने चाहे थे । हनुमान का उत्तर इस प्रकार था:

"तुम एक राक्षस राजा हो । तुम्हें मैं देखना चाहता था । इसलिए मैंने अशोक वाटिका में जमकर तोड़-फोड़ की । वैसे अब भी मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई है । मुझे वश में करने के लिए तुमने बलशाली से बलशाली राक्षस भेजे । मैं मजबूर था । मुझे उनसे युद्ध करना ही पड़ा । ब्रह्मदेव से मैंने वरदान प्राप्त किया था कि कोई अस्त्र या पाश मुझे बाँध न सके । पर तुम्हें देखना जो चाहता था, इसलिए ब्रह्मास्त्र में बंधना भी मैंने स्वीकार किया । यही सच्चाई है । महापराक्रमशाली राम का मैं दूत हूं । तुमसे मुझे काम भी है । मैं तुम्हारी भलाई चाहता हूं । मैं जो कहने जा रहा हूं, उसे तुम ध्यान से सुनो!

"सुग्रीव ने मेरे हाथ अपना कुशल समाचार भेजकर तुम्हारा कुशल समाचार जानना चाहा है । बालि को तुम जानते ही थे । उसे एक ही बाण से राम ने मार गिराया और सुग्रीव को वहां का राज सौंपा । सुग्रीव ने राम को वचन दिया है कि वह सीता की खोज करवायेगा, और उसी के अनुसार उसने वानरों को चारों दिशाओं में भेजा है । उनमें से एक मेरा नाम हनुमान है और मैं वायुदेव का पुत्र हूँ । मैं सौ योजन के पाट वाले समुद्र को पार करके यहां आया हूं, सीता को खोजने । सीता के दर्शन मैंने कर लिये हैं । वह तुम्हारे शिकंजे में है । तुम एक ज्ञानी व्यक्ति हो । धर्मशास्त्र के मर्मज्ञ हो । फिर तुमने एक

परायी स्त्री को अपने शिकंजे में क्यों कस रखा है? यह तुम्हें कतई शोभ नहीं देता । राम-लक्ष्मण के क्रो~ का भाजन बनकर तीनों लोकों में कोई सुखी नहीं रह सकता, यह तुम अच्छी तरह जान लो । सुग्रीव ने मुझे विशेष रूप से कहा है कि यह सब मैं तुम्हें जता दूं । मैंने सीता का पता लगा लिया है । बाकी काम अब राम का है । वह क्या करेंगे, वह वही जानें । मैं चाहता तो स्वयं ही समूची लंका का विध्वंस कर देता । लेकिन इसके लिए मुझे आज्ञा नहीं मिली । वानर-भालुओं की सेना के सामने उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि सीता का अपहरण करने वाले का वध वह स्वयं करेंगे । जान लो इस बात की सच्चाई को कि सीता तुम्हारे लिए मौत बनकर आयी है । अब तुम अपनी खैरियत मनाओ । मैं न मानव हूं, न राक्षस । इसलिए बिना पक्षपात के सच्चाई बयान किये दे रहा हूं । तुम्हें राम के वार से कोई नहीं बचा सकता ।"

हनुमान बिलकुल निर्भय होकर सब कुछ कहे जा रहा था । रावण से अब यह सहा नहीं गया । इसलिए वह गुस्से से चीखता हुआ बोला, "इस वानर को मृत्यु ही मिलनी चाहिए ।"

रावण की सभा में विभीषण भी था । वह बड़ा बुद्धिमान था । उसने रावण को समझाते हुए कहा, "लंकेश्वर! हनुमान को मारना राजधर्म के विरुद्ध होगा । यह लोकाचार के भी विरुद्ध होगा । आप अपने क्रोध पर काबू रखें और उसे वह दण्ड दें जो एक दूत के लिए उचित हो ।"

पर रावण का क्रोध वैसे ही बना हुआ था । उसी गुस्से में वह विभीषण से बोला, "यह वानर पापी है । पापी को मारने में कोई दोष नहीं होता ।"

विभीषण इससे सहमत नहीं हुआ । वह बोला, "बड़े-बुजुर्गों ने हमेशा यही कहा है कि किसी भी हालत में दूत को नहीं मारना चाहिए । पर दूतोचित कई दण्डों का प्रावधान है । आप उसे विकलांग बना सकते हैं, उसे चाबुक से मार सकते हैं, उसका सर मुंडवा सकते हैं, उस पर जलती लाख डाल सकते हैं, पर दूत को मृत्यु-दण्ड देने की कोई शास्त्र अनुमति नहीं देता । आप धैर्यवान हैं । क्रोध के वशीभूत हो जाना आपको

बिलकुल शोभा नहीं देता । और यह भी सोच लें कि इसे मृत्यु-दण्ड दे देने से आपका कौन-सा प्रयोजन सिद्ध होगा । मृत्यु-दण्ड इसे नहीं, उन्हें देना चाहिए जिन्होंने इसे यहां भेजा है । इसने जो कुछ कहा है, वह उसका अपना नहीं । दूसरे, मेरे विचार से केवल यही एक वानर है जो सागर पार कर सकता था । इसे मार डालेंगे तो राम-लक्ष्मण को कौन सूचित करेगा और फिर कौन आपके साथ युद्ध करेगा? राम-लक्ष्मण को यदि आप पराजित करें तो आपके चारों ओर कीर्ति फैलेगी ।"

रावण को विभीषण के तर्कों से संतोष हुआ । वह उसकी सलाह मानने को तैयार हो गया । बोला, "तुमने जो कुछ कहा, ठीक कहा । दूत को मारना वाकई अपराध-समान है । पर इसे सबक तो सिखाना ही होगा । इसे अपनी पूंछ प्यारी है । हम इसी में आग लगाकर इसे छोड़ देंगे ।"

रावण ने अपने निर्णय के अनुसार आदेश दिया कि हनुमान की पूंछ को आग लगा दी जाये, इसे पूरे नगर में घुमाया जाये और जहां-जहां चौराहा आये, वहां इसे खड़ा रखा जाये ।

रावण का आदेश पाकर राक्षसों ने ढेर सारे कपड़े इकट्ठे किये और उन्हें हनुमान की पूंछ पर लपेट दिया । फिर उन पर तेल उंडेला गया और उन्हें आग लगा दी गयी ।

हनुमान का क्रोध अब अपने चरम पर था । वह जंगल में लगी आग के समान था । जैसे आग धू-धू करके जल रही थी, वैसे ही उसका क्रोध भी बढ़ता गया था । उसने अब अपनी उसी जलती पूंछ को फटकारना शुरू

अस्त्र रखे हुए थे । उसे कुछ और गुप्त स्थलों का भी पता चला । जहां-जहां हनुमान को घुमाया गया, वहां-वहां उसका परिचय 'गुप्तचर' कहकर दिया गया ।

राक्षस स्त्रियों ने सीता को खबर दी कि हनुमान की पूंछ को आग लगा दी गयी है और उसे समूची लंका में घुमाया जा रहा है । इससे वह बहुत दु:खी हुई । उसने अग्निदेव से प्रार्थना की कि वह हनुमान को कोई क्षति न होने दें ।

सीता का दु:ख देखकर सरमा ने कहा, "बिलकुल चिंता मत करो उस वानर के लिए । वह महापराक्रमी है । वह महात्मा है । अब उसने अपने पीछे लगे राक्षसों को मार गिराया है और एक घर से दूसरे घर में कूदकर सारी लंका नगरी नष्ट किये दे रहा है । चाहो तो ज़रा उस ओर देख सकती हो ।"

सरमा ने जो सीता को बताया था, वह शतप्रतिशत ठीक था । हनुमान ने अपने शरीर को छोटा करके अपने को बंधन-मुक्त कर लिया था और फिर अपने शरीर को बढ़ाकर दैत्य-समान कर लिया था । वह अब राक्षसों को दण्ड देना चाहता था । इसलिए उसने नगर के द्वार पर स्थित लोहे की एक बहुत बड़ी शलाका को अपने हाथ में ले लिया था और उससे राक्षसों का वध किये जा रहा था । फिर उसके मन में लंका-दाहन का विचार आया और इसके साथ ही उसने अपनी जलती पूंछ से एक घर से दूसरे

किया और उसकी चपेट में आने वालों को मार गिराया ।

इस बीच लंका के बच्चों, बूढ़ों और स्त्रियों को जब पता चला कि हनुमान की पूंछ जल रही है तो वे उत्सुकतावश उसे देखने के लिए इकट्ठे होने लगे । राक्षसों ने हनुमान को फिर बांध दिया था, और उसे लेकर आगे बढ़ रहे थे । पर हनुमान को इस बात की बिलकुल चिंता नहीं थी कि उसकी पूंछ जल जायेगी । वह बिलकुल निर्भीक हो रहा था । अब तक वह अपने छोटे रूप में ही था ।

राक्षसों ने शंख फूंक-फूंककर और भेरी बजा-बजाकर हनुमान को पूरी लंका में घुमाया । इससे हनुमान को कुछ लाभ ही हुआ । उसने वे सभी स्थल देख लिये जहां

घर में छलांग लगाते समय उन्हें जलाना शुरू कर दिया ।

सब से पहले उसने प्रहस्त का घर जलाया । फिर वह महापार्श्व के घर पर कूदा । महापार्श्व का घर जब लपटें बन गया तो उसने शुक, वज्रदंष्ट्र, सारण, इंद्रजित, जंबुमाली, सुमाली आदि के घरों को जलाना शुरू कर दिया । चारों तरफ अब आग ही आग थी । पर उसने विभीषण के घर को अछूता छोड़ दिया था । हां, दूसरे राक्षसों के घरों को उसने जलाया ही नहीं, बल्कि उनकी धन-संपत्ति भी आग के हवाले कर दी । अंत में वह रावण के निवास पर पहुंचा, और उसे भी उसने भस्म कर दिया ।

अब तक अग्नि और वायु रावण से बराबर डरते आये थे । पर अब वे भी अपने में आ गये और उन्होंने अपनी शक्ति दिखानी शुरू कर दी । महल के सोने-चांदी के सब गहने और बर्तन गल चुके थे । बड़े-बड़े कक्ष राख बन चुके थे । राक्षस बिलकुल किंकर्त्तव्यविमूढ थे कि इस अग्निकांड को कैसे रोका जाये । उन्हें यह संदेह भी हुआ कि शायद अग्निदेव ही वानर के रूप में आ प्रकट हुआ है । कई राक्षस उस आग की भेंट चढ़ चुके थे । अपनी सुंदरता में अद्वितीय लंका अब भयंकर दिखती थी । राक्षसों का आर्तनाद दिग्-दिगंत में फैल गया था ।

अब कहीं जाकर हनुमान का क्रोध शांत हुआ । वह अब संतुष्ट था । वह जिस कार्य के लिए आया था, वह पूरा हो चुका था । अशोक वाटिका ध्वस्त पड़ी थी । अनेकों राक्षसों का नामोनिशान मिट चुका था । लंका नगरी मुर्दा घाट की तरह दिख रही थी । इसीलिए हनुमान ने अब अपनी पूंछ समुद्र में डुबो दी और आग को बुझा दिया ।

बाद में उसे पश्चात्ताप हुआ कि लंका को जलाकर उसने अच्छा नहीं किया । हो सकता है इस आग में सीता भी जल गयी हो । उसे तो सीता की रक्षा करनी चाहिए थी । वह अपने को धिक्कारने लगा । फिर उसने निश्चय किया कि यदि सीता को कुछ हो गया हुआ तो वह भी यहीं अपनी जान दे देगा । लेकिन फिर उसे एक और विचार आया – जिस अग्निदेव ने उसकी पूंछ की रक्षा की थी, वह भला सीता को क्यों जलाने लगेगा । इसलिए वह

शिंशुपा वृक्ष की ओर बढ़ा । वहां उसने उसके नीचे सीता को बैठा देखा । उसकी जान में जान आयी । उसने उसे नमस्कार किया, और बोला, "माता, मैं भाग्यशाली हूं कि आप कुशल हैं ।"

इस पर सीता बोली, "हनुमान, तुम्हारे पराक्रम की जितनी भी प्रशंसा की जाये, थोड़ी है । क्या तुम अकेले ही इन तमाम राक्षसों को मारकर मुझे राम के पास ले चलोगे? पर नहीं, राम स्वयं ही आयें और शत्रु का संहार करके मुझे लिवा ले जायें, इसी में मेरा मान है । इसलिए तुम राम से यही कहना ।"

"माता, आप इस संबंध में बिलकुल चिंता न करें । राम यहां ज़रूर आयेंगे और आपके दुःख दूर करेंगे ।" और यह कहकर हनुमान ने सीता से विदाई ली । फिर वह अरिष्ट नामक पर्वत पर चढ़ गया, और सागर पार करने के लिए उसने फिर से अपने शरीर को बढ़ा लिया । हवा में उठने से पहले एक बार उसने ज़ोर से पर्वत पर पांव की दाब दी जिससे पर्वत एक बार तो बुरी तरह कांप उठा ।

वह बादलों के बीच से होकर सागर पर उड़ता रहा । फिर उसे सागर के पार महेंद्र पर्वत दिखाई दिया । उसे देखकर उसने ज़ोर से सिंहनाद किया । अंगद और उसके साथी तो कब से वहां उस की राह देख रहे थे । इसलिए जैसे ही उन्होंने उसका सिंहनाद सुना, वैसे ही वे असीम उत्साह से भर गये ।

तब जांबवान ने दूसरे वानरों से कहा, "हनुमान का काम पूरा हुआ । नहीं तो वह ऐसी गर्जना न करता ।"

जांबवान की इस टिप्पणी से सभी वानर बहुत खुश हुए । वे हनुमान को देखने के लिए पेड़ों-पहाड़ों पर चढ़ गये । हनुमान उन्हें दूर से ही आता दिख रहा था । इसलिए वे आनंद से पेड़ों की शाखाएं हिलाने लगे । वे हनुमान की राह पर अपनी आंखें गड़ाये हुए थे ।

देखते ही देखते हनुमान महेन्द्र पर्वत पर आ उतरा । सब वानर वहीं थे । उनका उत्साह अब दुगुने वेग से उभर आया था । वे चारों ओर से उसे घेरने लगे । हनुमान के खाने के लिए उन्होंने पहले से ही काफी मात्रा में कंद-मूल जुटा रखे थे । पर हनुमान ने पहले जांबवान, अंगद तथा अन्य बड़ों को नमस्कार किया और फिर वह इतना ही बोला,

"मैं सीता माई को देख आया हूं।" यह कहकर उसने संक्षेप में लंका का वर्णन भी किया।

वानर अब बहुत खुश थे। उनकी खुशी का कोई वार-पार न था। कुछ ने तो सिंहनाद भी किया। कुछ ने गर्जना की। कुछ चीखने लगे। कुछ साधारण वानरों की तरह आवाज़ें करने लगे। कुछ ने ज़मीन पर अपनी पूंछें फटकारनी शुरू कर दीं।

हनुमान ने फिर कहा, "मैं देख आया सीता माई को।" इससे अधिक उससे कुछ कहते नहीं बना था।

तब अंगद हनुमान से बोला, "हनुमान, तुम सौ योजन के पाट वाले सागर को पार करके पहले लंका गये और अब सौ योजन की ही दूरी पार करके वापस आये हो! तुम्हारा बल और पराक्रम बेजोड़ हैं। और किसी के लिए यह संभव नहीं था। तुम्हारी राजभक्ति भी अनन्य है। तुम सीता का पता लगाकर उससे मिल आये हो, यह हमारा परम सौभाग्य है। आशा है, इससे राम का भी ढाढ़स बंधेगा। उन्हें सीता-वियोग अब उतना नहीं सतायेगा!"

सभी वानर अभी महेंद्र पर्वत पर ही बैठे थे। हनुमान, अंगद और जांबवान एकसाथ बैठे हुए थे। बाकी वानर अन्य शिलाओं पर बैठे थे। उनके मन में असीम कौतूहल था। वे जानना चाहते थे कि लंका में क्या-क्या घटा। वे उसके लिए अधीर हो रहे थे।

अब जांबवान ने ही प्रश्न किया, "पुत्र, सीता तक कैसे पहुंच पाये? वह कैसी है? रावण उसके प्रति कैसा व्यवहार करता है? हमें सब कुछ बताओ ताकि हम आगे की कार्यवाही के बारे में सोचें। हमें सब कुछ तुम हूबहू बताओ। कुछ भी छिपाने की ज़रूरत नहीं। तभी हम किसी निर्णय पर पहुंच सकेंगे। राम को बताने लायक कुछ होगा तो उसे बतायेंगे, वरना चुप लगा जायेंगे।"

बुराई का बदला

बात पुरानी है । सुदौलपुर गांव में मोतीराम नाम का एक गरीब किसान रहता था । उसका अपना न कोई मकान था, न ही कोई खेत का टुकड़ा । पट्टे पर वह किसी की चार बीघा ज़मीन लेकर खेती कर रहा था । वह बराबर कर्ज़ के नीचे दबता गया । उसने सुदौलपुर के कई लोगों से कर्ज़ ले रखा था और उसे चुकाने का उसके पास कोई ज़रिया नहीं था ।

एक दिन मोतीराम से उसकी पत्नी मुनिया ने कहा, "देखो जी, हमारे भाग्य में मेहनत-मज़दूरी ही लिखी है । कहीं से सौ अशरफियां जुटाओ, शहर जाओ और वह रकम मेरे बड़े भाई के हाथ पर रख दो । वह किसी को कुछ दे-दिलाकर तुम्हारे लिए कहीं नौकरी की व्यवस्था कर देगा ।"

मोतीराम को अपनी पत्नी की बात पसंद आयी । उसने इधर-उधर की हांककर किसी-न-किसी तरह सौ अशरफियों की व्यवस्था कर ली । फिर उस रकम के साथ वह जंगल से होता हुआ शहर के लिए चल पड़ा । बीच जंगल में ही लुटेरों ने उसे धर-दबोचा, और उससे उसकी अशरफियां ही नहीं छीनीं, बल्कि लुटेरों के सरदार ने उसे अपना सेवक बना लिया और अपनी मालिश के काम पर लगा लिया ।

चार महीने बीत गये । एक दिन एक आदमी घोड़े पर सवार जंगल के रास्ते से जा रहा था । लुटेरों ने उसे रोका । उसने लुटेरों का डटकर मुकाबिला किया । वह अकेला था और लुटेरे दस थे । उसके लिए अब ज़्यादा लड़ पाना असंभव हो गया था । वह बुरी तरह से थक गया था और बेहोश हो गया था । लुटेरों ने उसे अपने सरदार के सामने पेश किया ।

बेहोशी की हालत में लाये गये उस व्यक्ति

समीरा श्रीवास्तव

जयगुप्त दुखी होकर बोला, "तुमने मुझे अपना वचन देकर भी नहीं निभाया। इससे मुझे बहुत दुःख पहुंचा है। तुम तो अब जान ही गये होगे कि जाने या अनजाने में लुटेरे किसी को नहीं बख्शते, वह चाहे कितना भी भला और उपकारी व्यक्ति क्यों न हो। इसीलिए इसी पल से तुम यह लूट-पाट करना बंद करो और इज़्ज़त के साथ अपने दिन गुज़ारो, वरना मुझे यह दुःख हमेशा सताता रहेगा कि मैंने एक दुष्ट व्यक्ति को प्राणदान देकर दुनिया का अपकार किया।"

"महात्मा, एक बार मैंने वचन देकर और उसे न निभाकर बहुत गलती की। अब मुझसे ऐसी गलती नहीं होगी। आज तक मैंने जो अपराध किये हैं, उनके लिए मैं प्रायश्चित करना चाहता हूं। यहीं इसी जंगल में मैं चोर-डाकुओं से यात्रियों की रक्षा करता रहूंगा और खेती-बाड़ी करके अपना गुज़ारा करूंगा।" लुटेरों के सरदार ने उत्तर दिया।

सरदार में आये इस परिवर्तन से जयगुप्त बहुत खुश हुआ। मोतीराम ने किसी-न-किसी तरह साहस बटोरा और जयगुप्त को अपनी रामकथा कह सुनायी।

तब जयगुप्त ने लुटेरों के सरदार से कहा, "इन चार महीनों में इसने जो तुम्हारी सेवा की है, उसके ऐवज़ में तुम इसे चार सौ अशरफियां वेतन के रूप में दो और इसे अपनी राह लगने दो।"

सरदार ने वैसा ही किया। उसने मोतीराम को चार सौ अशरफियां तो दीं ही, साथ में

को देखकर लुटेरों के सरदार को अपने आदमियों पर बहुत गुस्सा आया। उसने ठंडा पानी मंगवाया और उस व्यक्ति को होश में लाने की कोशिश की। जैसे ही वह व्यक्ति होश में आया, लुटेरों का सरदार उसके पैरों पर गिर माफी मांगने लगा।

इस व्यक्ति का नाम जयगुप्त था। एक बार जब लुटेरों के सरदार को सैनिकों ने खदेड़ा तो जयगुप्त ने ही उसे अपने यहां शरण दी। उस समय वह बुरी तरह से घायल था। जयगुप्त ने उसकी चिकित्सा भी करवायी। लुटेरों का सरदार जब पूरी तरह से स्वस्थ हो गया तो उसने जाते समय वचन दिया कि वह भविष्य में चोरी या लूट-मार नहीं करेगा।

उसकी सौ अशरफियां भी लौटा दीं ।

अब जयगुप्त ने मोतीराम को संबोधित करते हुए कहा, "मैं तुम्हारे गांव सुदौलपुर ही जा रहा था । मुझे वैद्य जी ने बताया है कि तुम्हारे गांव की जलवायु मेरे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक रहेगी । मुझे पता चला है कि सुदौलपुर में किशनलाल नाम का एक आदमी अपना घर और खेत बेचना चाहता है । मैं वह घर और खेत खरीदने के लिए पंद्रह हजार अशरफियां लेकर निकला था । बीच में यह हादसा हो गया । मैं अब इस हालत में सुदौलपुर नहीं जा सकता । मैं वापस शहर जाऊंगा और वहां कुछ दिन आराम करने के बाद सुदौलपुर पहुंचूंगा । इस बीच तुम मेरी ओर से वह खेत और घर मेरे लिए खरीद रखो । ये पंद्रह हजार अशरफियां तुम अपने साथ ले जाओ ।" यह कहकर जयगुप्त ने मोतीराम को एक थैली दी । लुटेरों के सरदार को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने जयगुप्त से कहा, "आप इस अनजान व्यक्ति के हाथों में किस विश्वास से यह रकम दे रहे हैं । यदि यह आपको धोखा दे गया और यह रकम स्वयं ही हडप कर गया तो आप इसका क्या कर पायेंगे?"

लुटेरों के सरदार की बात सुनकर जयगुप्त हंस पड़ा, बोला, "मैं आदमी की नेकी पर विश्वास करता हूँ । यदि मोतीराम ने यह रकम हड़प कर भी ली तो मुझे केवल पंद्रह हज़ार अशरफियों की ही हानि होगी । यह हानि मैं आसानी से सह सकता हूँ, क्योंकि यह

मेरी दौलत का लाखवां भाग भी नहीं । लेकिन नेकी का बदला बुराई से देकर मोतीराम उससे प्राप्त होने वाले लाभ को कैसे पचा पायेगा और कैसे वह संभल पायेगा, सोचने की बात तो यह है । अगर हानि ज़्यादा न उठानी पड़े तो मैं तब तक आदमी की नेकी में विश्वास किये रहता हूँ । यह मेरी प्रकृति है ।"

इसके बाद जयगुप्त शहर के लिए रवाना हो गया और मोतीराम उस रकम के साथ सुदौलपुर के लिए चल पड़ा ।

सुदौलपुर पहुँचकर मोतीराम ने सारी बात अपनी पत्नी को बतायी । पति से बात सुनकर पत्नी बोली, "लगता है वह जयगुप्त एक नंबर का मूर्ख है । किशनलाल का

खेत और घर हम मेरे बड़े भाई के नाम से खरीद लेंगे ।"

मोतीराम को यह तरकीब पसंद आयी । उसने दो हजार अशरफियों से गाँव में अपने सारे छोटे-मोटे कर्ज चुकता कर दिये और बाकी की रकम से किशनलाल का घर और खेत खरीदकर लोगों से कहने लगा, "यह घर और खेत खरीदने के लिए मेरे साले ने मुझे पैसे दिये थे । उसी के लिए हमने इन्हें खीरदा है ।" और इस तरह झूठ-मूठ कहकर उसने लोगों को बहका दिया ।

इसके एक महीने बाद ही जयगुप्त का आदमी शहर से सुदौलपुर गाँव आया । उसके पास मोतीराम के नाम जयगुप्त का एक पत्र था । वह पत्र उसने मोतीराम को दिया । पत्र में लिखा था कि वह अभी और एक महीने तक सुदौलपुर नहीं आ सकेगा, लकिन मोतीराम इस व्यक्ति के हाथ यह खबर भेज दे कि उसने वह घर और ज़मीन खरीदी है कि नहीं ।

मोतीराम ने पत्र का उत्तर इस प्रकार भेजा—'महोदय, इससे पहले आपने एक और व्यक्ति भेजा था । वह जो पत्र लाया था, उसमें यह लिखा था कि आप वह जायदाद खरीदना नहीं चाहते, इसलिए आपकी रकम उस व्यक्ति के हाथ लौटा दी जाये । उसके कारण गाँव के लोगों को पता चल गया कि मेरे पास अच्छी-खासी रकम है । इसलिए जिन-जिनका मैंने कर्ज देना था, वे मुझ पर टूट पड़े और मजबूरन मुझे वह रकम कर्ज उतारने के काम में लानी पड़ी । अब वह घर और खेत मेरे साले ने खरीद लिये हैं । मेरी कोशिश यही होगी कि मैं आपकी रकम छोटी-छोटी किस्तों में उतार दूँ ।'

उसी सप्ताह मोतीराम को जयगुप्त से एक और संदेश मिला—'तुमने मुझे धोखा दिया है । तुम जैसा धोखेबाज़ जिस गाँव में हो, मैं वहाँ रहना नहीं चाहता । इसलिए अब मैं तुम्हारे गाँव में न आकर एक दूसरे गाँव में आराम करने के लिए जाऊँगा ।'

वह संदेश पाकर मोतीराम दु:खी हुआ । लेकिन उसकी पत्नी मुनिया बोली, "इसमें दु:खी होने की बात क्या है । तुमने उसे धोखा कहाँ दिया है? उसकी पंद्रह हज़ार अशरफियों की रकम लौटाने से तो तुम मुकरे नहीं हो ।

तुम धोखेबाज़ होते तो यह भी कह सकते थे कि तुमने वह रकम ली ही नहीं । पर तुमने ऐसा नहीं किया । दरअसल, तुम्हारी नेकी जयगुप्त ने पहचानी ही नहीं । मुझे वह आदमी ठीक नहीं लगता । तुम उसकी बात पर बिलकुल दु:खी मत हो ।"

मोतीराम अपनी पत्नी की दलील से आश्वस्त हो गया । इस तरह दो साल और बीत गये । पास में पैसा होने के बावजूद मोतीराम को किसी प्रकार का कोई लाभ नहीं हुआ । दूसरी तरफ प्रकृति भी उसकी विरोधी हो गयी । समय पर वर्षा न होने के कारण उसकी फसल बरबाद हो गयी । एकाएक उधर तूफान आ गया जिससे उसका घर सपाट कर दिया । घर को ठीक करने के लिए उसे खासी रकम खर्च करनी पड़ी । इस तरह एक बार फिर वह कर्ज की चपेट में आ गया ।

उन्हीं दिनों मोतीराम को पता चला कि पास के जंगल में एक योगी है जो हर समस्या का समाधान बताता है । मोतीराम को लगा कि उसे उसके पास जाना चाहिए और कोई तो उसे समाधान दे नहीं सका था । इसलिए वह सौ अशरफियों के साथ उस योगी से भेंट करने निकल पड़ा ।

लेकिन जंगल में ज़्यादा दूर नहीं गया था कि एक लुटेरे ने उसे रोका, और उसे सारी रकम उसके हवाले कर देने को कहा । इतने में दो व्यक्ति बिजली की गति से वहाँ आ धमके और उन्होंने लुटेरे को अपनी गिरफ्त में ले लिया । फिर वे उसे अपने साथ ले जाते हुए

बोले, "इस तरह चोरी-करना और लोगों को लूटना तुमने छोड़ा नहीं । तुम्हें बहुत समझाया गया, पर तुम नहीं माने । अब तुम्हें माफ नहीं किया जायेगा । हमारा सरदार ही अब तुमसे निपटेगा ।"

मोतीराम समझ गया कि वे दोनों व्यक्ति उसी लुटेरों के सरदार के अनुचर हैं, और जयगुप्त के दिये वचन के अनुसार वे जंगल में लुटेरों के आतंक को खत्म करने में लगे हैं । मोतीराम को इससे बहुत खुशी हुई ।

इसके बाद मोतीराम उस योगी के पास गया । योगी ने बड़ी तीखी निगाहों से उसकी तरफ देखा, और बोला, "समझ गया, तुम वही महापापी हो जिसने उपकार का बदला अपकार से दिया । जाओ और पहले उस

उपकारी से क्षमा माँगो । तब तुम्हें मुक्ति मिल पायेगी ।"

लाचार मोतीराम योगी के यहाँ से सीधा शहर केलिए रवाना हुआ, और वहाँ जयगुप्त के घर का पता लगाकर उसके यहाँ गया और उससे अपनी धोखाधड़ी कबूल करके माफी माँगी ।

इस पर जयगुप्त थोड़ा-सा हंसा । फिर बोला, "गरीबी कई बुराइयों को जन्म देती है । जब मुझे पता चला कि तुमने मुझे धोखा दिया है तो मैंने तुम्हें वह पत्र भेजा । और जैसे ही मैंने तुम्हें वह पत्र भेजा, मेरा सारा गुस्सा काफूर हो गया । तुमने मुझसे स्वयं आकर माफी नहीं माँगी थी, फिर भी मैंने तुम्हें माफ कर दिया ।"

जयगुप्त की सहृदयता के प्रति मोतीराम ने अपनी कृतज्ञता प्रकट की और अपने गांव के लिए लौट पड़ा । पर जैसे ही उसने जंगल में पाँव रखा, उसे एक और शक हुआ । यदि जयगुप्त ने उसे बहुत पहले ही क्षमा कर दिया था तो फिर उसकी यह दुर्दशा कैसे हुई? वह मन ही मन हिसाब-क़िताब लगाने लगा ।

इसलिए मोतीराम फिर उसी योगी के पास गया और उससे बोला, "भगवन्, जयगुप्त ने कहा कि उसने मुझे बहुत पहले ही क्षमा कर दिया था । फिर मेरे सामने ये समस्याएँ क्यों खड़ी हुईं? मैं इसका कारण जानना चाहता हूँ । अब तो मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि मेरी इन समस्याओं का कारण कुछ और है । आप कृपा करके मेरी शंकाएँ दूर करें ।"

इस पर योगी बोला, "अच्छे लोग क्षमा करते हैं, पर उनकी क्षमा बुरे लोगों के दुष्कर्मों को धो डालती होगी, यों समझना सरासर नादानी है । इस संसार में बुरे लोग अधिक हैं । अच्छे लोग कम हैं । यदि बुरे लोगों का पाप अच्छे लोगों की क्षमा से धुल जाता तो बुरे लोगों की बुराइयों का कब का अंत हो गया होता । भला आदमी कभी-कभी अपनी क्षमा का गलत उपयोग भी करता है, क्योंकि उसका काम हमेशा क्षमा करना ही है । पर जिसके दिल में स्वयं अपने दुष्कर्मों के प्रति पश्चात्ताप पैदा नहीं होता, वह अपने व्यवहार में कभी बदलाव नहीं ला पाता । उसे चाहे भला आदमी क्षमा भी कर दे, पर भगवान उसे क्षमा नहीं करता । तुमने उस व्यक्ति का

घर-खेत उसका न होने दिया। तुम अब उसका घर-खेत लौटा दो और उसके पांव पर गिरकर क्षमा मांगो। तभी वह क्षमा याचना अपना असर करेगी। तुमने केवल अपनी समस्याओं के समाधान केलिए उससे क्षमा मांगी थी। पर तुम्हारे दिल में कोई परिवर्तन नहीं था। एक समय था जब एक व्यक्ति लूट-मार करता था और राहगीरों को जंगल से गुज़रने नहीं देता था। पर जब उसके दिल में परिवर्तन आया तो उसने राहगीरों की लुटेरों से रक्षा करनी शुरू कर दी। एक लुटेरे में जो सच्चाई और ईमानदारी है, वह भी तुम्हारे भीतर नहीं है। जयगुप्त ने यदि तुम्हें क्षमा भी कर दिया तो वह तो उसकी प्रकृति है। पर भगवान ने तुम्हें क्षमा नहीं किया। यह सच्चाई तुम स्वयं सोच-परख सकते हो।"

अब मोतीराम को अपने अपराध का ठीक-ठीक एहसास हो गया था। उसे अब अपनी करनी पर पश्चात्ताप हुआ। वह उस पश्चात्ताप के कारण जयगुप्त से सच्चे दिल से माफी मांगने के लिए एक बार फिर शहर की ओर चल पड़ा और वहाँ उसने जयगुप्त से फिर माफी माँगी।

जयगुप्त ने मोतीराम को सांत्वना देते हुए कहा, "अरे पगले, तुमने जो रकम हड़प की है, वह तो मेरी संपत्ति का एक लाखवां अंश भी नहीं है—सागर में बूंद समान ही कहो। यह बात तो मैंने उस सरदार को भी बता दी थी। इतना ही नहीं, मैंने तुम्हें यह संदेश भी भिजवाया था कि तुम जिस गाँव में हो, वहाँ मैं कदम भी नहीं रखूँगा। अब तो वह बात आयी-गयी हो गयी। अब आज से ही स्वार्थ को त्यागो और नेकी करके अपने दिन गुज़ारो। वह घर और खेत अब तुम्हारे ही हैं। मैं उन्हें वापस लेना नहीं चाहता।"

मोतीराम का दिल अब बहुत भारी हो आया था। उसने अपने तमाम उल्टे-सीधे खर्चा पर अंकुश लगाया और पैसा इकट्ठा करने लगा। जब उसके पास काफी रकम जमा हो गयी तो उसने सूद-समेत जयगुप्त की रकम लौटा दी। अब वह अच्छे कामों में ही ध्यान लगाता था। वह एक नेक इंसान कहलाने लगा था, और उसके दिन अब चैन से बीत रहे थे।

आदर्श राजा

मणिपुर का एक राजा था । उसका नाम चंद्रकांत था । अपनी प्रजा को वह अपनी संतान मानता था और उसकी सुख-समृद्धि के लिए वह दिन-रात काम में लगा रहता था । वह एक धर्मप्रिय राजा था, और साथ ही महान् पराक्रमी भी था । पर जैसे चांद में दाग होता है, वैसे ही उसमें भी एक दाग था—उसे चुगली सुनने का बहुत शौक था और उस पर विश्वास भी कर बैठता था । यानी झूठी प्रशंसा के जाल में वह फंस जाता था, और इससे मक्कारों की मक्कारी अपना काम कर जाती थी ।

राजा की यह कमज़ोरी कुछ अबोध और निर्दोष लोगों को बहुत मंहगी पड़ती थी । राजा चुगलखोरों की बात सच मानकर उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा दे डालता था । उसकी इसी एक कमज़ोरी के कारण वह धीरे-धीरे लोगों में अप्रिय होने लगा और उसकी प्रतिष्ठा गिरने लगी ।

एक दिन दरबार का ज्योतिषी, श्रीनंद, राजभवन के पास से गुज़र रहा था । सामने से उसे एक व्यक्ति आता दिखाई दिया । उसके कंधे पर कटहल का एक बड़ा-सा फल था । वह अपने रास्ते चुपचाप चला जा रहा था, लेकिन श्रीनंद ने उसे यूं जाने नहीं दिया, उसे रोका और प्रश्न किया, "किसके लिए ले जा रहे थे यह कटहल? यह तो काफी बड़ा है और पका हुआ भी खूब है! बताओ, कहां लिये जा रहे थे इसे?"

वह व्यक्ति श्रीनंद को नहीं जानता था । उस व्यक्ति ने एक बार श्रीनंद की ओर ध्यान से देखा । वह कोई बड़ा-भला सा दिखाई पड़ा । इस लिए अदब के साथ उसने उसे उत्तर दिया, "महोदय, यह मेरे बाग का पहला कटहल है । राजा, प्रजा का भगवान् होता है । इसलिए यह मैं उन्हें ही भेंट

ममता अग्रवाल

करने जा रहा हूं ।"

"ओ, तो यह बात है! खूब! खूब! हाँ, लेकिन असली बात तो मैं भूल ही गया । सामने से जब तुम आ रहे थे तो मैंने तुम्हारा चेहरा ग़ौर से पढ़ा । तुम में राजा बनने के सभी लक्षण हैं । मुझे विश्वास है कि एक-न-एक दिन तुम इस देश के राजा ज़रूर बनोगे । बस, यही बात थी । यह बात तुम्हें बताये बिना रहना मुझ से मुमकिन नहीं हुआ था, इसीलिए मैंने तुम्हें रोका और बता दिया था ।" और यह कहकर श्रीनंद थोड़ा आगे बढ़ गया ।

राजा चंद्रकांत राजभवन के ऊपरी तल्ले पर हवाखोरी करता टहल रहा था । उसके कानों में श्रीनंद की बात पड़ी । उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह श्रीनंद क्या कह रहा है? राजा चन्द्रकांत जानता था कि श्रीनंद एक महान् ज्योतिषी है । इसलिए राजा ने मन ही मन सोचा, उसके मुंह से निकली बात झूठी नहीं हो सकती । पर राजा चुप रहा । उसने इंतज़ार करना ही ठीक समझा ।

श्रीनंद उस व्यक्ति से अभी ज़्यादा दूर नहीं गया था । श्रीनंद की बात ने एकाएक उस व्यक्ति पर बड़ा असर किया । उसकी आंखें एकदम चमक उठीं । उसने मुड़कर श्रीनंद से प्रश्न किया, "महोदय, क्या मैं जान सकता कि आप मेरे बारे में इस नतीजे पर कैसे पहुंचे? ज़रा खोलकर तो बताइए ।"

"क्यों नहीं, पर मैं मुफ़्त नहीं बताता ।" श्रीनंद ने पासा फेंका ।

उस व्यक्ति में तो अब खलबली मची हुई
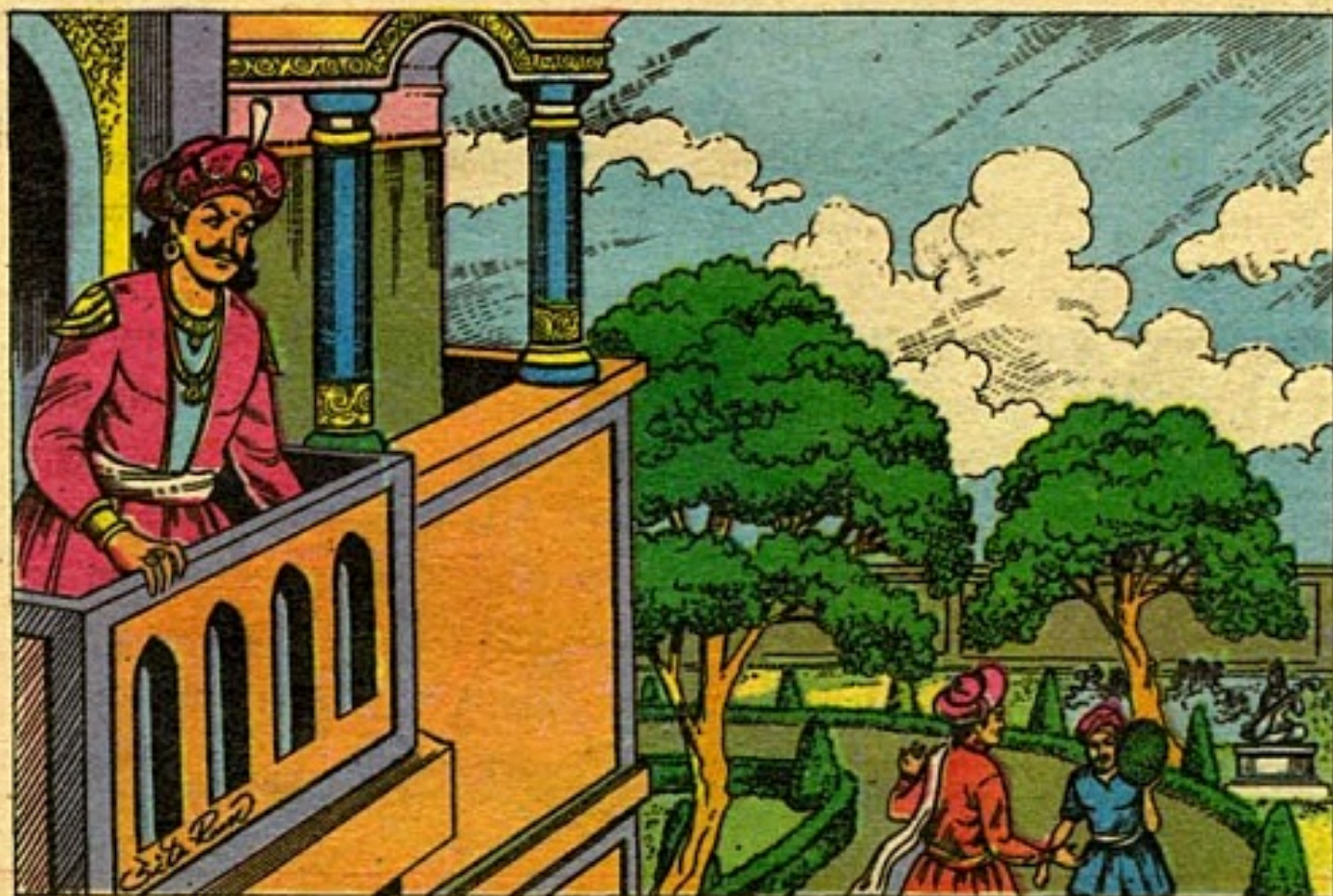
थी । वह जानना चाहता था कि उसमें ऐसे कौन-से लक्षण हैं जिनकी बदौलत वह राजा बनेगा । इस खलबली के कारण वह यह भी भूल गया था कि वह राजा के दर्शन करने निकला है और उसे यह कटहल उसी की भेंट करना है ।

अपने कंधे पर रखा कटहल उसने श्रीनंद के हाथ पर रख दिया और बोला, "महोदय, मैं एक ग़रीब आदमी हूं । मेरे पास आप को देने को तो कुछ है नहीं । केवल यही कटहल है । आप इसे स्वीकार करें और मुझे बतायें कि मुझ में आपको वे कौन से लक्षण दिखाई दिये । आप से यह जानने को मैं बहुत व्यग्र हूं ।"

श्रीनंद उस व्यक्ति के सीधेपन पर हंस दिया । फिर उससे बोला, "तुम जानते हो मैं कौन हूं?"

"नहीं," उस व्यक्ति ने कहा, "मैंने तो पहले कभी आपको देखा ही नहीं ।"

"ओ, तो यह बात है! तुम मुझे जानते तक नहीं और फिर भी तुम मेरी चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गये । अरे, इतना तो सोचा होता कि तुम एक गरीब किसान हो । तुम राजा बनने के सपने कैसे पाल सकते हो? और तो और, राजा को भेंट में देने के लिए जो कटहल तुम लिये जा रहे थे, वह भी तुमने मुझे दे डाला! तुम्हारे जैसा सीधा व्यक्ति मैंने पहले कभी नहीं देखा । तुम तो झट किसी की बातों में आ गये । इस देश का राजा बानने के लिए तुम्हें और क्या चाहिए? यह तो सब से बड़ा लक्षण है ।" यह कहकर श्रीनंद ने किसान का कटहल उसे लौटा दिया और स्वयं आगे बढ़ गया ।

राजा ने ये सब बातें भी सुन ली थीं । सुनते ही उसकी आंखें खुल गयीं । वह समझ गया कि श्रीनंद ने उसे चेताने के लिए ही यह सब कहा है ।

चंद्रकांत अब पूरी तरह संभल गया था । उसमें अभूतपूर्व परिवर्तन आ गया था । उसकी प्रजा अब उससे पूरी तरह खुश थी । वह अब एक आदर्श राजा था ।
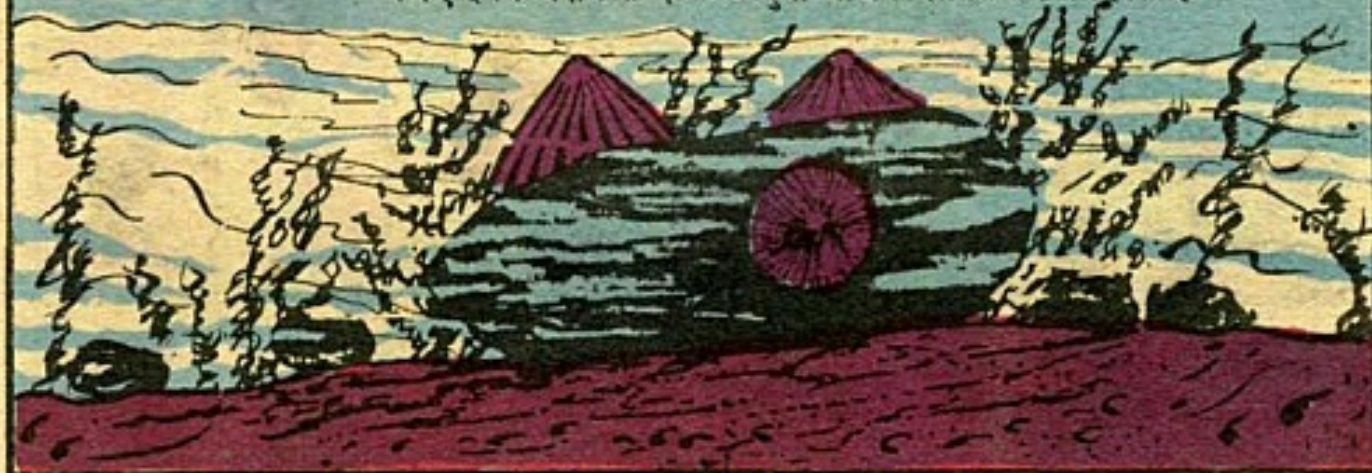
कुछ भेड़ें ऐसी भी हैं जो ज़मीन पर उगती हैं । नहीं, यह दरअसल एक पौधा है जो न्यूज़ीलैंड में पाया जाता है । इसके पत्ते ऊन जैसे होते हैं, जो दूर से मैदान में चरने वाली भेड़ के समान दिखते हैं । इसीलिए इसे वनस्पति भेड़ भी कहा जाता है ।

सवाल बच्चों के भविष्य का ....

जीवन बीमा का कोई विकल्प नहीं

भारतीय जीवन बीमा निगम

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ दिसम्बर १९९१ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

S. B. Takalkar

Manjula

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० अक्तूबर '९१ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

अगस्त १९९१ की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : सौंप गई मां जिम्मेदारी!

द्वितीय फोटो : दूंगी सब को बारी बारी!!

प्रेषक : अभिनन्दन प्रसाद गुप्ता, १३४, गोल बाजार, खड़गपुर।

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

NOW with the added fun of SPUTNIK Junior!

Selections from Sputnik Junior!.

* Colourfully illustrated stories and cartoons.
* Superb science fiction
* Entertainment and general knowledge

64 packed pages!
At just Rs. 6/-

Sputnik Junior

To subscribe write to.

JUNIOR QUEST,
Dolton Agencies,
Chandamama Buildings,
N.S.K. Salai, Vadapalani,
Madras: 600 026.

A Chandamama
Vijaya Combines
publication

Show your little ones how much you love them! And is there a better way of doing that than giving them a huggable, cuddlable playmate?

Cuddles. From the people who have given children the delightful entertainer of a magazine, Chandamama. Cuddles. A whole new range of stuffed toys. And, your old favourites. And, cute surprises being introduced regularly. Each one a sweet, adorable companion to your child. Absolutely safe. Designed to withstand childhandling.

Well, the fun and excitement of the festive season is just round the corner. Make it memorable for your child with a special gesture. With a Cuddle.

- CUDDLES — Stuffed toys from Chandamama.
- SAMMO — Mechanical and electronic toys from Chandamama

CUDDLES

Manufactured in technical collaboration with Sammo Corporation, South Korea

CHANDAMAMA TOYTRONIX

Chandamama Toytronix Private Limited, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras - 600 026

from

THE HOUSE OF

CHANDAMAMA

CUDDLES AND SAMMO TOYS WILL BE AVAILABLE AT ALL LEADING TOY OUTLETS EXCEPT IN THE STATES OF ASSAM, HIMACHAL PRADESH, MADHYA PRADESH AND NORTH EASTERN STATES

CHANDAMAMA (Hindi) October 1991 Regd. No. M. 5452